Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

अल्लाह तआला का आदेश

ثُمَّ اَفِيۡضُوۡا مِنۡ حَيۡثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسۡتَغۡفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ○

(सूरः बकरः आयत : 200)

अनुवाद : फिर जहाँ से लोग लौटते हैं, वहाँ से तुम भी लौट जाओ और अल्लाह से क्षमा याचना करो। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक - 31
मूल्य 600 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

05 सफ़र, 1446-47 हिज्री कमरी, 31 वफ़ा 1404 हिज्री शम्सी, 31 जुलाई 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक शख़्स को मस्जिद में (क़ुरआन मजीद) पढ़ते सुना तो आप ने फ़रमाया: अल्लाह इस पर रहम करे, इसने तो मुझे फ़लाँ-फ़लाँ आयत याद दिला दी हैं जिन्हें मैं फ़लाँ-फ़लाँ सूरह में भूल गया था। और इबाद बिन अब्दुल्लाह ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत करते हुए इतना और बढ़ाया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे घर में तहज्जुद की नमाज़ पढ़ रहे थे कि इतने में आप ने अब्बाद (बिन बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हु) की आवाज़ सुनी जो मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे, तो आप ने पूछा। आयशा! क्या यह अब्बाद की आवाज़ है? मैंने कहा: हाँ। आप ने फ़रमाया: ऐ अल्लाह! अब्बाद पर रहम कर।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: देखो बिलाल रात को अज़ान देते हैं, तुम खाते-पीते रहो, यहाँ तक कि इब्न उम्मे मकतूम अज़ान दें या फ़रमाया: यहाँ तक कि तुम इब्न उम्मे मकतूम की अज़ान सुनो। और हज़रत इब्न उम्मे मकतूम नाबिना शख़्स थे, वह अज़ान नहीं दिया करते थे जब तक कि लोग उनको न कहते कि सुबह हो गई है।

★ ★ ★

जितना निकटता (कुर्ब) इंसान अल्लाह से प्राप्त करेगा, उतना ही वह दुआओं की क़ुबूलियत के फलों से हिस्सा लेगा। जितना वह दूर होता जाता है, उतना ही उसकी दुआओं की क़ुबूलियत में पर्दा और फ़ासिला बढ़ता जाता है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

दुआ की क़ुबूलियत की शर्त

यह अच्छी तरह याद रखो कि इंसान की दुआ तभी क़ुबूल होती है जब वह अल्लाह तआला के लिए ग़फ़लत, फिस्क़ व फ़ुजूर (पाप और अवज्ञा) को छोड़ दे। जितना निकटता इंसान अल्लाह से प्राप्त करेगा, उतना ही वह दुआओं की क़ुबूलियत के फलों से हिस्सा लेगा। इसीलिए फ़रमाया गया है:

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِىۡ عَنِّىۡ فَاِنِّىۡ قَرِيۡبٌ ؕ اُجِيۡبُ دَعۡوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلۡيَسۡتَجِيۡبُوۡا لِىۡ وَلۡيُؤۡمِنُوۡا بِىۡ لَعَلَّهُمۡ يَرۡشُدُوۡنَ

"और जब मेरे बन्दे मेरे बारे में तुमसे पूछें तो (बता दो कि) मैं निकट हूँ, पुकारने वाले की पुकार सुनता हूँ जब वह मुझे पुकारे। अतः उन्हें चाहिए कि मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान लाएँ, ताकि वह सीधे मार्ग पर आ जाएँ।" (सूरत अल-बक़रा: 187)

और दूसरी जगह फ़रमाया गया है: وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنۡ مَّكَانٍۢ بَعِيۡدٍ

"और उनके लिए दूर के स्थान से मेरी ओर आने की कोई रास्ता नहीं है।" (सूरत सबा: 53) अर्थात जो मुझसे दूर हो, उसकी दुआ मैं कैसे सुनूँ? यहाँ गोया क़ुदरत के आम क़ानून के नज़ारे से एक सबक़ दिया गया है। यह नहीं कि अल्लाह सुन नहीं सकता। वह तो दिल के छिपे से छिपे इरादों से भी वाक़िफ़ है, और उन इरादों से भी जो अभी पैदा भी नहीं हुए। लेकिन यहाँ इंसान को अल्लाह की निकटता की तरफ़ तवज्जोह दिलाई गई है कि जैसे दूर की आवाज़ सुनाई नहीं देती, उसी तरह जो शख़्स ग़फ़लत और फिस्क़ व फ़ुजूर में मुब्तिला होकर मुझसे दूर होता जाता है, जितना वह दूर होता है, उतना ही उसकी दुआओं की क़ुबूलियत में हिजाब और फ़ासिला बढ़ता जाता है।

नवाफ़िल (नफ़्ल) की हक़ीक़त

नादान इंसान कभी-कभी दुआ के न क़ुबूल होने से मुरतद (धर्म से फिर जाने वाला) हो जाता है। सहीह बुख़ारी में हदीस मौजूद है कि नवाफ़िल से मोमिन मेरा करीब हो जाता है। एक फ़रायज़ होते हैं, दूसरे नवाफ़िल। अर्थात एक तो वह अहकाम हैं जो हक़ व वाजिब के तौर पर हैं, और नवाफ़िल वह हैं जो फ़रायज़ के अलावा हैं, और वह इसलिए हैं ताकि फ़रायज़ में अगर कोई कमी रह गई हो तो नवाफ़िल से पूरी हो जाए।

लोगों ने नवाफ़िल को सिर्फ़ नमाज़ के नवाफ़िल समझ रखा है। नहीं, यह बात नहीं है। हर फ़ेल के साथ नवाफ़िल होते हैं। इंसान ज़कात देता है तो कभी ज़कात के सिवा भी दे। रमज़ान में रोज़े रखता है तो कभी उसके सिवा भी रखे। क़र्ज़ ले तो कुछ साथ ज़ाएद दे, क्योंकि उसने उदारता की है।

नवाफ़िल फ़रायज़ के मुतम्मिम (पूरक) होते हैं। नफ़्ल के वक़्त दिल में एक ख़ुशूओ (विनम्रता) और ख़ौफ़ होता है कि फ़रायज़ में जो क़सूर हुआ है, वह अब पूरा हो जाए। यही वह राज़ है जो नवाफ़िल को कुर्ब-ए-इलाही के साथ बहुत बड़ा तअल्लुक़ देता है। गोया ख़ुशूओ, तज़ल्लुल (अपने आप को छोटा समझना) और इन्क़िता (दुनिया से कट जाने) की हालत इसमें पैदा होती है, और इसीलिए तक़र्रुब (निकटता) की वजह से अय्याम-ए-बीज़ (चाँदनी के दिनों) के रोज़े, शव्वाल के छह रोज़े यह सब नवाफ़िल हैं। (मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 79-80, एडिशन 2018, क़ादियान)

इस्लाम अमानत और ईमानदारी तथा समझौतों का पालन करने को विशेष महत्व देता है और कहता है कि वही मोमिन सफल हो सकते हैं जो अमानत और वफ़ादारी में भी उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करने वाले हों।

सैयदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरतुल मोमिनून आयत 9 "وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِاَمٰنٰتِهِمۡ وَعَهۡدِهِمۡ رٰعُوۡنَ" की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं:

फिर एफ़ाए अहद (वादे को पूरा करने) का रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इतना ख़्याल रहता था कि अभी आपने दावए नुबूवत भी नहीं फ़रमाया था कि क़बायली लड़ाइयों और रोज़मर्रा के आपसी झगड़ों और फ़सादात को देखकर मक्का के कुछ नौजवानों ने एक अंजुमन बनाई जिसका मक़सद यह था कि वह मज़लूमों की मदद किया करेगी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी इस मजलिस में शामिल हुए और सब ने मिलकर यह क़समें खाईं कि जब तक समंदर में पानी का एक क़तरा भी मौजूद है, वह हमेशा मज़लूमों की मदद करेंगे और उनके हक़ उनको ज़ालिम से दिलवाने की कोशिश करेंगे। और अगर वह ऐसा नहीं कर सकेंगे तो अपने पास से मज़लूम का हक़ अदा करेंगे।

यह अंजुमन जो मज़लूमों की दादरसी और उनकी अमानत का बेड़ा उठाकर खड़ी हुई थी, उसने क्या काम किया और किस तरह मज़लूमों की मदद की? इस बारे में तारीख़ी तौर पर कुछ ज़्यादा मालूमात नहीं मिलतीं, मगर दावए नुबूवत के बाद जब मक्का के लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जानलेवा दुश्मन बन गए, एक शख़्स जिसने अबू जहल से कुछ रुपये लेने थे मगर वह देता नहीं था, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया और उसने अर्ज़ किया कि आप हल्फ़ुल फ़ुज़ूल में शामिल रह चुके हैं और आपने उसकी क़सम खाई थी कि हमेशा मज़लूमों की मदद फ़रमाएंगे। मैं आपको आपका अहद याद दिलाते हुए दरख़्वास्त करता हूँ कि मेरे कुछ रुपये अबू जहल ने देने हैं, आप उसके पास चलें और मुझे यह रुपये दिला दें।

जब उसने यह बात कही तो बावजूद इसके कि मक्का में खुले बंदों घूमना रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए ख़तरे का मूजिब था और फिर अबू जहल आपका सख़्ततरीन दुश्मन था और हो सकता था कि वह आपको कोई नुक़सान पहुँचाए, आप फ़ौरन उठे और उसके साथ चलकर अबू जहल के मकान पर जा पहुँचे और दरवाज़ा खटखटाया।

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

जब नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का लश्कर फ़ारान के जंगल में दाख़िल हुआ तो इसकी तादाद सुलेमान नबी की भविष्यवाणी के अनुसार दस हज़ार तक पहुँच चुकी थी।

नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मक़बूल दुआओं के तुफ़ैल अल्लाह तआला ने उस ख़त के विषय में आप को इत्तिला दे दी जो क़ुरैश-ए-मक्का को आप के प्रोग्राम से मुत्तलि करने के लिए पोशीदा तौर पर भिजवाया जा रहा था।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुशाबहत जिन चंद लोगों से मिलती थी, उनमें हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे।

ग़ज़वा-ए-फ़तह-ए-मक्का के तनाज़ुर में सीरत-ए-नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पुर-असर बयान।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 20 जून 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

मक्का की विजय (ग़ज़वा-ए-फ़तह-ए-मक्का) का वर्णन हो रहा था। इसके लिए रवाना होने से पहले एक घटना का भी उल्लेख मिलता है जिसमें वर्णित है कि एक सहाबी ने अपनी नासमझी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यात्रा की सूचना मक्का वालों को देने का प्रयास किया, लेकिन अल्लाह तआला ने आपको इसकी सूचना दे दी और इस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस योजना की जानकारी काफ़िरों तक नहीं पहुँच सकी।

इसकी विस्तार में लिखा है: मदीना में जब मक्का जाने की तैयारियाँ शुरू हो गईं, तो एक बद्री सहाबी जो कि मदीना में मौजूद थे - हज़रत हातिब बिन अबी बलतअह रज़ियल्लाहु अन्हु उनका नाम था - उन्होंने क़ुरैश की ओर एक पत्र लिखा जिसमें उन्हें बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपकी ओर रवानगी का कार्यक्रम बनाया है। उन्होंने वह पत्र एक महिला को सौंपा जिसका संबंध मुज़ैना से था। इस महिला का नाम कनूद या सारा था। यह बनू अब्दुल मुत्तलिब में से एक व्यक्ति की दासी थी। उन्होंने उसके लिए मेहनताना निर्धारित किया कि वह यह पत्र अहले मक्का तक पहुँचा दे और कहा कि जहाँ तक संभव हो इस पत्र को गुप्त रखे और सामान्य मार्ग से जाने से मना किया क्योंकि वहाँ पहरा था। इस महिला ने पत्र को सिर की चोटी में रखा और चोटी बना दी। फिर पत्र को लेकर निकली। इस पत्र में यह लिखा था कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आपकी ओर एक ऐसा सेना लेकर आ रहे हैं जो रात के समान है, अर्थात बहुत बड़ी सेना है और तेज़ बाढ़ की तरह तीव्र गति से आ रही है। और मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूँ कि यदि वह अकेले भी आपकी ओर चल पड़ें तो आपके विरुद्ध अल्लाह उनकी अवश्य मदद करेगा और वह अल्लाह अपना वादा पूरा करके ही छोड़ेगा जो उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया हुआ है। इसलिए आप अपना प्रबंध कर लें।

एक दूसरी रिवायत में यह भी लिखा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सेना लेकर निकलने वाले हैं आपकी ओर या आप लोगों के अलावा किसी और ओर, यह नहीं कहा जा सकता। बहरहाल आप लोग पूरी सावधानी बरतें और मैंने चाहा कि इस ख़बर के कारण मेरा आप पर एक एहसान रहे।

(अस-सीरतुन नबविय्यह बिरवायतिल इमामिल बुख़ारी, डॉ. रियाज़ हाशिम हादी, पृष्ठ 136, मतबूआ दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)(फ़तहुल बारी, जिल्द 7, पृष्ठ 663, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल फ़तह, हदीस संख्या 4274, क़दीमी किताब ख़ाना आराम बाग़, कराची)(सीरतुल हलबिय्या, जिल्द 3, पृष्ठ 109, शामिला दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)(अर-रौदुल अनफ़, ज़िक्रुल अस्बाबिल मूजिबा लिल मसीर..., जिल्द 4, पृष्ठ 150-151, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)(ग़ज़वातुन नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अली बिन बुरहानुद्दीन हलबी, पृष्ठ 549, दारुल इशाअत, कराची)

एक रिवायत के अनुसार उन्होंने यह पत्र सफ़वान बिन उमय्या, सुहैल बिन अम्र और इक्रिमा बिन अबी जहल की ओर लिखा था।

(इम्ताउल अस्माअ, ग़ज़वतुल फ़तह, ख़बर हातिब, जिल्द 1, पृष्ठ 352, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)

दूसरी ओर, नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मक़बूल दुआओं के तुफ़ैल अल्लाह तआला ने इस पत्र की सूचना आपको दे दी। चुनांचे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं इस घटना का वर्णन करते हुए कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे और अबू मरसद ग़नवी और ज़ुबैर को भेजा और हम सभी घुड़सवार थे। आपने फ़रमाया कि तुम रवाना हो जाओ यहाँ तक कि तुम रौज़ा-ए-ख़ाख़ (एक स्थान है) वहाँ पहुँचो। यह मदीना और मक्का के बीच एक स्थान है। वहाँ मुशरिकों में से एक महिला होगी। उसके पास हातिब बिन अबी बलतअह की ओर से मुशरिकों के नाम एक पत्र है। चुनांचे हमने उसे उसी स्थान पर पा लिया जहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था। वह अपने ऊँट पर जा रही थी। हमने कहा - पत्र निकालो। वह बोली - मेरे पास कोई पत्र नहीं है। हमने उसके ऊँट को बैठा दिया और तलाशी ली, मगर हमें कोई पत्र नज़र नहीं आया। हमने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़लत नहीं फ़रमाया। तुम्हें वह पत्र निकालना होगा, वरना हम तुम्हें नंगा कर देंगे। तुम्हारे कपड़ों की तलाशी लेंगे। जब उसने सख़्ती देखी तो अपनी कमर की ओर झुकी। वह अपनी कमर के चारों ओर एक चादर बाँधे हुए थी, उसमें से उसने उसे निकालकर दे दिया। बुख़ारी की ही एक दूसरी रिवायत के अनुसार उसने अपने सिर के बालों के अंदर से उसे निकाला।

(दो रिवायतें हैं।) हम इस महिला को लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा - या रसूलुल्लाह! इस (हातिब) ने जो सहाबी थे, जिन्होंने पत्र लिखा था, उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल तथा मोमिनीन से ख़ियानत की है। मुझे इजाज़त दीजिए, मैं इसकी गर्दन मार दूँ। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हातिब से पूछा - किस बात ने तुम्हें इस पर आमादा किया है जो तुमने किया है? यह पत्र क्यों लिखा है? हातिब ने अर्ज़ किया - अल्लाह की क़सम! मैं क्या था कि मैं अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने वाला न होता, अर्थात मैं तो ईमान लाने वालों में से हूँ और यह कोई बग़ावत नहीं है। कहने लगे - वजह यह थी कि मैंने चाहा कि इन (क़ुरैश) के लोगों पर मेरा एहसान हो जिसके ज़रिए अल्लाह मेरे बाल-बच्चों और जायदाद की हिफ़ाज़त करता और आपके साथियों में से कोई भी ऐसा नहीं जिसके परिवार का वहाँ कोई ऐसा व्यक्ति न हो जिसके ज़रिए से अल्लाह उसके बाल-बच्चों और उसकी जायदाद की हिफ़ाज़त करता है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया - इसने सच कहा है और तुम भी इसके बारे में अच्छी बात के सिवा कुछ न कहो। ठीक कहा है इसने। सच्चा है, मासूमियत में बात कर दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि क्या यह जंग-ए-बद्र में शरीक नहीं था? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि बेशक अल्लाह ने अहले बद्र को देखा और फ़रमाया - तुम जो चाहो करो, तुम्हारे लिए जन्नत वाजिब हो चुकी। या फ़रमाया - मैंने तुम्हें माफ़

कर दिया। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आँखों से आँसू जारी हो गए और कहने लगे - अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते हैं।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, हदीस संख्या 3983, रिवायत संख्या 3007)(उम्दतुल क़ारी, जिल्द 7, पृष्ठ 137, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरुत)(फ़रहंगे सीरत, पृष्ठ 136, ज़व्वार अकादमी, कराची)

इस घटना का उल्लेख हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इतिहास की विभिन्न पुस्तकों के संदर्भों से किया है। लिखा है कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में एक सहाबी ने अपने रिश्तेदारों को मक्का पर मुसलमानों के हमला करने की ख़बर गुप्त रूप से पहुँचानी चाही ताकि इस हमदर्दी के इज़हार की वजह से वे उसके रिश्तेदारों से नेक सुलूक करें, लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इल्हाम के ज़रिए यह बात बता दी गई। आपने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और कुछ अन्य सहाबा को भेजा कि अमुक जगह एक औरत है, उससे जाकर कागज़ ले आओ। उन्होंने वहाँ पहुँचकर उस औरत से कागज़ माँगा तो उसने इनकार कर दिया। कुछ सहाबा ने कहा कि शायद रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गलती लगी है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा- नहीं, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात कभी गलत नहीं हो सकती।" यह ईमान था। "जब तक उससे वह कागज़ न मिले, मैं यहाँ से नहीं हटूँगा। उन्होंने उस औरत को डाँटा तो उसने वह कागज़ निकालकर दे दिया।" (खुतबात-ए-महमूद, जिल्द 4, पृष्ठ 182-183)

एक अन्य स्थान पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अधिक विस्तार से इस घटना को बयान किया है। फ़रमाते हैं कि "एक कमज़ोर सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने मक्का वालों को ख़त लिख दिया कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस हज़ार का लश्कर लेकर निकले हैं। मुझे मालूम नहीं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहाँ जा रहे हैं? लेकिन मैं क़यास करता हूँ कि ग़ालिबन वह मक्का की तरफ़ आ रहे हैं। मेरे मक्का में कुछ अज़ीज़ और रिश्तेदार हैं, मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम इस मुश्किल घड़ी में उनकी मदद करोगे और उन्हें किसी क़िस्म की तकलीफ़ नहीं पहुँचने दोगे। यह ख़त अभी मक्का नहीं पहुँचा था कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुबह के वक़्त हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और फ़रमाया- तुम फलां जगह जाओ। अल्लाह तआला ने मुझे बताया है कि वहाँ एक औरत ऊँटनी पर सवार तुमको मिलेगी, उसके पास एक ख़त होगा जो वह मक्का वालों की तरफ़ ले जा रही है। तुम वह ख़त उस औरत से ले लेना और फ़ौरन मेरे पास आ जाना। जब वह जाने लगे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- देखना, वह औरत है, उस पर सख़्ती न करना।" शुरुआती तौर पर सख़्ती नहीं करनी। "इसरार करना और ज़ोर देना कि तुम्हारे पास ख़त है, लेकिन अगर फिर भी वह न माने और मिन्नतें-समाजतें भी काम न आएं" तो फिर यह ऐसा मामला है कि "तो फिर तुम सख़्ती भी कर सकते हो और अगर उसे क़त्ल करना पड़े तो क़त्ल भी कर सकते हो, लेकिन ख़त नहीं जाने देना।" ख़त बहुत ज़रूरी है, उसे रोका जाए। "चुनांचे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु वहाँ पहुँच गए। औरत मौजूद थी। वह रोने लग गई और क़समें खाने लग गई कि क्या मैं ग़द्दार हूँ? धोखेबाज़ हूँ? आख़िर क्या है, तुम तलाशी ले लो। चुनांचे उन्होंने इधर-उधर देखा, उसकी जेबें टटोलीं, सामान देखा मगर ख़त नहीं मिला। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम कहने लगे- मालूम होता है ख़त इसके पास नहीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को जोश आ गया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने" हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने "कहा- तुम चुप रहो और बड़े जोश से कहा कि ख़ुदा की क़सम! रसूल कभी झूठ नहीं बोल सकता। चुनांचे उन्होंने उस औरत से कहा- मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा है कि तेरे पास ख़त है और ख़ुदा की क़सम! मैं झूठ नहीं बोल रहा। फिर आप ने तलवार निकाली और कहा- या तो सीधे तौर पर ख़त निकालकर दे दे वरना याद रख, अगर तुझे नंगा करके भी तलाशी लेनी पड़ी तो मैं तुझे नंगा करवाऊँगा क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सच बोला है और तू झूठ बोल रही है। चुनांचे वह डर गई और जब उसे नंगा करने की धमकी दी गई तो उसने झट अपनी चोटी खोली। उन चोटियों में उसने ख़त रखा हुआ था जो उसने निकालकर दे दिया।" (सीरत रूहानी (7) अनवारुल उलूम, जिल्द 24, पृष्ठ 262-263) सिर के बालों में छुपाया हुआ था।

बहरहाल, इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफ़र शुरू किया। नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदीना से रवानगी के बारे में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू रुहम बिन हुसैन ग़िफ़ारी को मदीना में अपना नायब मुक़र्रर किया। इब्न इशाक़ के अनुसार आप मुहाजिरीन, अंसार और अरब के गिरोहों के साथ रवाना हुए जबकि रमज़ान के दस रोज़ गुज़र चुके थे, लेकिन मसनद अहमद की एक रिवायत के अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम 2 रमज़ान को मदीना से रवाना हुए। शारह बुख़ारी अल्लामा इब्न हजर ने 2 रमज़ान वाली रिवायत को तरजीह दी है। बहरहाल, इस सफ़र में कुछ लोग घोड़ों पर और कुछ ऊँटों पर सवार थे।

(फ़तहुल बारी, जिल्द 8, पृष्ठ 4, क़दीमी किताब ख़ाना आराम बाग़, कराची) (सुबुलुल हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 212, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरुत) (सीरत इब्न इशाक़, पृष्ठ 670, अल-मकतबतुल अस्रिया, बेरुत)

जब मदीना से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सरकर्दगी में फ़ौज रवाना हुई तो उसमें तक़रीबन सात हज़ार चार सौ जाँबाज़ शामिल थे। इस तादाद में मुख़्तलिफ़ क़बाइल बनू असद और सुलैम आदि के शामिल होने से इज़ाफ़ा होता रहा यहाँ तक कि मक्का के रास्ते पर चलते-चलते उसकी तादाद दस हज़ार तक हो गई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुलसुल मक़ाम पर पहुँचे जो ज़ुल हलीफ़ा से आगे चढ़ाई पर मक़ाम बैदा के पास एक पहाड़ था, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु को दो सौ सवारों के साथ आगे भेज दिया।

कुछ किताबों में इस लश्कर की तादाद बारह हज़ार भी बयान हुई है लेकिन ज़्यादातर रिवायत दस हज़ार की बयान हुई है और वही ज़्यादा दुरुस्त मालूम होती है।

(अस-सीरतुल हलबिया, जिल्द 3, पृष्ठ 110, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरुत) (फ़तह-ए-मक्का, बाशमील, पृष्ठ 145-146, नफ़ीस अकादमी, कराची) (तबक़ातुल कुबरा, जिल्द दूसरा, पृष्ठ 102, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरुत) (फ़रहंग-ए-सीरत, पृष्ठ 174, ज़व्वार अकादमी, कराची)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस वाक़िए को इस तरह बयान फ़रमाया है कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी दौरान में चारों तरफ़ मुसलमान क़बाइल की तरफ़ पैग़ामबर भिजवा दिए और जब यह इत्तिलाएँ आ चुकीं कि मुसलमान क़बाइल तैयार हो चुके हैं और मक्का की तरफ़ कूच करते हुए रास्ते में मिलते जाएँगे तो आप ने मदीना के लोगों को मुसल्लह होने का हुक्म दिया। जनवरी 630 ई. की पहली तारीख" अर्थात दस रमज़ान आठ हिजरी "को यह लश्कर मदीना से रवाना हुआ और रास्ते में चारों तरफ़ मुसलमान क़बाइल आ-आ कर लश्कर में शामिल होते गए।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने दस रमज़ान ही लिखा है। "कुछ ही मंज़िलें तय करने के बाद जब यह लश्कर फ़ारान के जंगल में दाख़िल हुआ तो इसकी तादाद सुलेमान नबी की भविष्यवाणी के अनुसार दस हज़ार तक पहुँच चुकी थी।"

(दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, जिल्द 20, पृष्ठ 337) (किताबुत तौफ़ीक़ातिल इल्हामिया, पृष्ठ 40, अल-मुअस्ससतुल अरबिया लिद दिरासात)

इस सफ़र में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह अज़वाज-ए-मुतह्हरात में से हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। कुछ रिवायतों के अनुसार उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा भी साथ थीं।

(मक़ालात-ए-सीरत, डॉ. मुहम्मद यासीन मज़हर सिद्दीक़ी, जिल्द 3, पृष्ठ 259) (किताबुल मग़ाज़ी, अल-वाक़िदी, जिल्द 2, पृष्ठ 289, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरुत)

बुख़ारी की एक रिवायत में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की साहिबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का भी ज़िक्र मिलता है कि वह भी साथ थीं।

(बुख़ारी, किताबुस्सलाह, बाबुस्सलाह फिल सौबिल वाहिद मुल्तहिफ़न बिहि, हदीस नंबर 357)

यह सफ़र रमज़ान के महीने में हुआ था। रिवायतों से मालूम होता है कि सफ़र के शुरुआती कुछ दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोज़ा रखा, लेकिन फिर आप ने रोज़ा नहीं रखा बल्कि दूसरे सहाबा को भी रोज़ा रखने से मना फ़रमाया। बुख़ारी में है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रमज़ान में ग़ज़वा-ए-फ़तह के लिए रवाना हुए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रोज़े से थे यहाँ तक कि जब आप 'कदीद' चश्मे पर पहुँचे जो 'क़ुदैद' और 'उस्फ़ान' के दरमियान है और मक्का से बयालीस मील के फ़ासले पर है, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोज़ा इफ़्तार कर लिया। फिर आप ने रोज़ा नहीं रखा यहाँ तक कि वह महीना गुज़र गया।

(बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल फ़तह फी रमज़ान, हदीस नंबर 4275) (शरहुज़ ज़रक़ानी अला अल-मवाहिबिल लदुन्निया, जिल्द 3, पृष्ठ 332, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरुत)

बुख़ारी में यह रिवायत है। बुख़ारी ही की एक और रिवायत हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रमज़ान में मदीना से निकले और आप के साथ दस हज़ार का लश्कर था और यह मदीना में आप की

आमद से साढ़े आठ साल के सर पर हुआ और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का की तरफ़ रवाना हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुसलमानों में से जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे, आप रोज़ा रखते और वे भी रोज़ा रखते। यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम 'कदीद' में पहुँचे और वह एक चश्मा है 'उस्फ़ान' और 'क़ुदैद' के दरमियान। वहाँ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोज़ा इफ़्तार किया और लोगों ने भी रोज़ा इफ़्तार किया।

(बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल फ़तह फी रमज़ान, हदीस नंबर 4276)

इस बारे में शारह बुख़ारी अल्लामा इब्ने हजर बयान करते हैं कि यह ख़्याल कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस दिन मदीना से रवाना हुए उसी दिन आप ने रोज़ा इफ़्तार किया था, यह दुरुस्त नहीं है क्योंकि मदीना और 'कदीद' के दरमियान कई दिन की मसाफ़त थी।

(फ़तहुल बारी, जिल्द 4, पृष्ठ 227, किताबुस्सौम, बाब इज़ा सामा अय्यामन मिन रमज़ान सुम्म साफ़र, क़दीमी किताब ख़ाना आराम बाग़, कराची)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा के साथ मिलकर रोज़ा किस मक़ाम पर इफ़्तार किया? इस बारे में रिवायतों में मुतअद्दिद मक़ामात का तज़्किरा मिलता है। बाज़ लोग कहते हैं कि 'क़ुदैद' में इफ़्तार किया। इस की मज़ीद तफ़्सील यह कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस सफ़र के दौरान रोज़ा कहाँ इफ़्तार किया था? इस के बारे में रिवायतों में इख़्तिलाफ़ है। अल्लामा अयनी के नज़दीक बाज़ ने 'कदीद' की जगह 'उस्फ़ान' लिखा है। बाज़ ने 'कुराअुल ग़मीम' का ज़िक्र किया है। बाज़ ने 'क़ुदैद' लिखा है। क़ाज़ी इयाज़ इस हवाले से बयान करते हैं कि रिवायतों में इस जगह के बारे में इख़्तिलाफ़ है जहाँ नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोज़ा इफ़्तार किया था। हालाँकि इन तमाम रिवायतों में एक ही वाक़िया बयान हुआ है और वह तमाम जगहें एक दूसरे के क़रीब हैं और यह सब जगहें 'उस्फ़ान' के इलाक़े में हैं।

(उम्दतुल क़ारी, जिल्द 11, पृष्ठ 68, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम 'अरज' से रवाना हुए तो रास्ते में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक कुतिया देखी। उसके बच्चे उसका दूध पी रहे थे। जानवरों से हमदर्दी का वाक़िया भी इस में आ जाता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत जुअइल बिन सुराक़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि वह उसके सामने खड़े हो जाएँ। जहाँ यह बैठी है वहाँ खड़े हो जाएँ ताकि लश्कर में से कोई उसके साथ या उसके बच्चों के साथ कोई तअर्रुज़ न करे। उन्हें डिस्टर्ब न करे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जासूसों को पकड़ने के लिए घुड़सवारों का दस्ता मुसलमानों के आगे-आगे रवाना किया हुआ था और बनू ख़ुज़ाआ भी रास्ते पर किसी राहगीर को जाने नहीं देते थे। दूसरा क़बीला जो था उन्होंने भी रोका हुआ था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भेजा हुआ दस्ता हवाज़िन का एक जासूस गिरफ़्तार कर के लाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस से पूछा तो उस ने बताया कि हवाज़िन आप के लिए जमा हो रहे हैं।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि इस जासूस को रोके रखें ताकि वह आगे जा कर लोगों को ख़बरदार न कर दे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम 'क़ुदैद' पहुँचे तो वहाँ बनू सुलैम जो एक हज़ार की तादाद में थे, आप के साथ शामिल हुए। यहाँ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने झंडे और परचम बाँधे और उन्हें क़बाइल में तक़्सीम किया। 'क़ुदैद' के मैदान में लश्कर-ए-नबवी की तैयारी क़बाइली बुनियाद पर हुई। हर क़बीले की फ़ौज पर उसी क़बीले का आदमी अफ़्सर मुक़र्रर किया गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अंसार को ख़ानदानी बुनियाद पर बारह दस्तों में तक़्सीम किया। छह दस्ते औस के और छह ख़ज़रज के। मुहाजिरीन के तीन झंडे हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु के पास थे।

(सुबुलुल हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 212, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)(फ़तह-ए-मक्का, बाशमील, पृष्ठ 167-175, नफ़ीस अकादमी, कराची)(दाइरा मआरिफ़ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 79, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)(सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 9, पृष्ठ 133, दारुस्सलाम)(फ़तहुल बारी, जिल्द 8, पृष्ठ 8, क़दीमी किताब ख़ाना आराम बाग़, कराची)

इस मुहिम के दौरान एक वाक़िया का ज़िक्र आता है जो कि अबूसुफ़ियान बिन हारिस (यह अबूसुफ़ियान और हैं, यह अबूसुफ़ियान बिन हर्ब नहीं हैं) और अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या के इस्लाम क़बूल करने का वर्णन है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा जाद भाई और रिज़ाई भाई अबूसुफ़ियान बिन हारिस - यह चचा जाद भाई भी थे और रिज़ाई भाई भी थे - अपने बेटे जाफ़र और अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या बिन मुग़ीरा के साथ मक्का से निकले और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का और मदीना के दरमियान 'सन्नियतुल अक़ाब' नामी मक़ाम पर मिले। यह दोनों नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सख़्त दुश्मन थे। इसलिए उन्हें हिम्मत नहीं हुई कि सीधे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हों। उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा जो कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हु की बहन थीं, उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आपके चचा जाद अर्थात अबूसुफ़ियान बिन हारिस और फ़ूफ़ी जाद और सिहरी रिश्तेदार अर्थात अब्दुल्लाह आपसे मिलने के ख़्वाहिशमंद हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मुझे इनकी कोई ज़रूरत नहीं। मैं नहीं मिलना चाहता।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मेरे चचा जाद ने तो मेरी हतक की है। यह शायर थे और आपकी हज्जो किया करते थे। और अब्दुल्लाह ने मुझे मक्का में क्या-क्या नहीं कहा। दुश्मनी की इंतिहा की थी। मैं किस तरह उनसे मिलूँ?"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह बात जब अबूसुफ़ियान बिन हारिस को पहुँची तो उसने जज़्बात से मग़लूब होकर कहा कि "अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझसे राज़ी नहीं होते और मिलने की इजाज़त नहीं देते तो मैं अपने इस बेटे को जिसको साथ लेकर आए थे, साथ लेकर सहराओं की तरफ निकल जाऊँगा यहाँ तक कि भूख और प्यास से मर जाऊँगा।" आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक जब यह बात पहुँची तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन दोनों को बुलाया और शर्फ़-ए-मुलाक़ात बख़्शी। फ़ौरन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दिल नर्म हो गया। दोनों ने इस्लाम क़बूल किया और फिर उनका इस्लाम बहुत ही अच्छा रहा।

अबूसुफ़ियान बिन हारिस का तआरुफ़ यह है जैसा कि पहले भी मैंने बताया कि यह अबूसुफ़ियान और हैं। तारीख़-ए-इस्लाम में अबूसुफ़ियान नाम के दो अफ़राद ज़्यादा मआरूफ़ हैं। एक अबूसुफ़ियान जो क़ुरैश-ए-मक्का का सरदार था और हिंद जिसने हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का कलेजा चबाया था, उसका ख़ाविंद था। यह अबूसुफ़ियान बिन हर्ब के नाम से मआरूफ़ है और दूसरे यह अबूसुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब हैं। यह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा जाद भाई थे।

मुअर्रिख़ीन बाज़ अवक़ात नामों की मुशाबहत की वजह से ग़लती खा जाते हैं और अबूसुफ़ियान बिन हारिस की बजाय अबूसुफ़ियान बिन हर्ब बयान कर देते हैं। जैसे जंग-ए-हुनैन में जब मुसलमानों में भगदड़ मच गई तो लिखा है कि अबूसुफ़ियान नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खच्चर की लगाम या रकाब थामे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ खड़ा था। बाज़ मुअर्रिख़ीन ने अबूसुफ़ियान बिन हर्ब मुराद लिया है, हालाँकि तारीख़दाँ यही कहते हैं कि वह अबूसुफ़ियान बिन हर्ब नहीं था बल्कि अबूसुफ़ियान बिन हारिस थे और यह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रिज़ाई भाई भी थे क्योंकि हलीमा सअदिया ने उनको भी दूध पिलाया था। उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बहुत मुहब्बत थी लेकिन जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नुबूवत का दावा किया तो यह सख़्त मुआनिद और मुख़ालिफ़ हो गए। यह मक्का के बड़े शुअरा में शुमार होते थे और इस मुख़ालफ़त की वजह से उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी करते हुए बहुत हज्विया कलाम भी कहा है। हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु उनकी हज्जो का जवाब दिया करते थे और उनके कलाम में जहाँ यह आता है कि "अबूसुफ़ियान को यह बात पहुँचा दो" तो उससे मुराद भी उमूमन अबूसुफ़ियान बिन हारिस होता था।

तारीख़ुल ख़मीस में है कि अबूसुफ़ियान ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा: "ताल्लाहि लक़द आसरकल्लाहु अलैना व इन कुन्ना लख़ातिईन"। यह सूरत यूसुफ़ की आयत नंबर 92 है कि "ताल्लाहि लक़द आसरकल्लाहु अलैना व इन कुन्ना लख़ातिईन" जिसका अनुवाद यह है कि उन्होंने कहा: "हमें अल्लाह की क़सम है, अल्लाह ने आपको हम पर यक़ीनन फ़ज़ीलत दी है और हम बिलाशुबह ख़ता कार थे।" इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबूसुफ़ियान से फ़रमाया: "ला सरीबा अलैकुमुल यौम, यग़फ़िरुल्लाहु लकुम व हुवा अरहमुर राहिमीन" (यूसुफ़:93) "अब तुम पर किसी क़िस्म की मलामत नहीं होगी और अल्लाह भी तुम्हें बख़्श देगा और वह सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाला है।" रिवायत के अनुसार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबूसुफ़ियान को कहा था कि तुम इस तरह यह फ़िकरा कहते हुए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की

ख़िदमत में हाज़िर होकर माफ़ी माँग लो। रिवायत में आता है कि उस वक़्त शर्मो-हया की वजह से अबूसुफ़ियान अपना सर ऊपर नहीं उठा रहा था जब वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश हुआ।

बहरहाल, अबूसुफ़ियान बिन हारिस जो कि पहले नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हज्जो में शेअर कहते थे, अब इस्लाम लाने के बाद उनकी शाएरी सारी की सारी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत व अक़ीदत से भरपूर थी और उन्होंने इस्लाम क़बूल करने के बाद नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदह् में एक क़सीदा लिखा था।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुशाबहत जिन चंद लोगों से मिलती थी, उनमें हज़रत अबूसुफ़ियान बिन हारिस भी थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें जन्नत की बशारत दी। उनका शुमार अफ़ज़ल सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में होता था। उनका इस्लाम बहुत अच्छा रहा। वफ़ात से तीन दिन पहले ख़ुद उन्होंने अपनी क़ब्र खोदी और जब वफ़ात का वक़्त आया तो कहने लगे: "मुझ पर रोना मत क्योंकि जब से मैंने इस्लाम क़बूल किया है, मैंने अपने दामन को किसी गुनाह से आलूदा नहीं किया।" नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात पर उन्होंने एक दर्दनाक मर्सिया कहकर अपने जज़्बात का इज़हार किया जिसके कुछ अशआर का अनुवाद यह है कि "मैं बहुत बेचैन हूँ इस वजह से कि मेरी रात ख़त्म नहीं हो रही और मुसीबतज़दा आदमी की रात तो लंबी होती है। और रोने ने मुझे राहत दी है और यह रोना उस तकलीफ़ के मुक़ाबले में जो मुसलमानों को पहुँची है, कुछ भी नहीं। जिस शाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई, उस शाम हमारी मुसीबत और भी बड़ी और ज़्यादा हो गई। क़रीब है कि हमारी सरज़मीन इस मुसीबत की वजह से जो इस पर आई है, हमारे सामने उलट जाए।" फिर लिखा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात की वजह से वही ख़त्म हो गई और क़ुरआन जिसे जिब्रील सुबह-शाम लाया करते थे, उतरना बंद हो गया। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को मुख़ातिब करते हुए एक शेअर में कहा कि "ऐ फ़ातिमा! अगर तू इस मौक़े पर रोए तो तेरा रोना दुरुस्त है और अगर न रोए तो यही अस्ल तरीक़ा है। पस तू सब्र में पनाह ले क्योंकि इसमें ख़ुदा की तरफ़ से सवाब है जो बहुत बड़ा फ़ज़्ल है। और तू अपने वालिद, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ूबियाँ बयान कर और तारीफ़ करने से न थक क्योंकि आप की जो तारीफ़ भी की जाए, वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़ज़ीलत को बयान नहीं कर सकती।" इस क़सीदे में वह कहते हैं

وَفِيۡهِ سَيِّدُ النَّاسِ الرَّسُوۡلُ   فَقَبۡرُ اَبِيۡكِ سَيِّدُ كُلِّ قَبۡرٍ

ऐ फ़ातिमा! तेरे बाप की क़ब्र तमाम क़ब्रों की सरदार है क्योंकि उसमें रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दफ़्न हैं जो तमाम इंसानों के सरदार हैं। हज़रत अबूसुफ़ियान की वफ़ात पंद्रह हिजरी या बीस हिजरी में हुई थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ाई थी।

अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या जो दूसरे थे, उनका मुख़्तसर तआरुफ़ यह है। उनका नाम हुज़ैफ़ा आता है। यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फूफ़ी आतिका के बेटे थे। इस निस्बत से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फूफ़ी जाद भाई भी थे और उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के भाई थे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दावए नुबूवत किया तो यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शदीद मुख़ालिफ़ हो गए और मुख़ालफ़त करने वालों में बहुत बढ़ गए थे। क़ुरआन करीम में आया है कि "व क़ालू लन नूमिना लक हत्ता तफ्जुरा लना मिनल अर्ज़ी यंबूआ" (बनी इसराईल:91) और उन्होंने यह भी कहा कि हम हरगिज़ तेरी कोई बात नहीं मानेंगे जब तक ऐसा न हो कि तू हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा जारी करे। कहा जाता है कि यह कहने वाले यही अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या थे लेकिन इस्लाम क़बूल करने के बाद उन्होंने बड़ी जानफ़िशानी से जंग-ए-हुनैन में हिस्सा लिया और ग़ज़वा-ए-ताइफ़ में एक तीर लगने से शहादत पाई।

(माख़ूज़ असदुल ग़ाबा, जिल्द 6, पृष्ठ 141-143; जिल्द 3, पृष्ठ 176, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)(तारीख़ुल ख़मीस, जिल्द 2, पृष्ठ 474, दार सादिर, बेरूत)(अल-इसतीआब, जिल्द 3, पृष्ठ 868, दारुल जील, बेरूत)(शरह अल्लामा ज़रक़ानी, जिल्द 3, पृष्ठ 399-401, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)(सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़ौलिल्लाह तआला व यौमे हुनैन..., हदीस नंबर 4317)

इस मुहिम में हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की लश्कर-ए-इस्लाम में शुमूलियत के बारे में लिखा है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का की तरफ़ सफ़र शुरू किया तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदीना की तरफ़ हिजरत के लिए मक्का से रख़्त-ए-सफ़र बाँधा। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु जुहफ़ा में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आ मिले। जुहफ़ा मक्का से छिहत्तर मील के फ़ासिले पर वाक़े है। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने सामान को मदीना भिजवा दिया और ख़ुद वापस मक्का की तरफ़ आप के साथ सफ़र शुरू कर दिया।

(सुबुलुल हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 213-214, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)
(अर-रौदुल मुआत्तर फी ख़बरिल अक़्तार, पृष्ठ 156, मकतबा लुब्नान, 1984 ई.)

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु का मुख़्तसर तआरुफ़ यह है कि हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दो या तीन साल बड़े थे। अपने बेटे फ़ज़्ल बिन अब्बास की वजह से अबुल फ़ज़्ल की कुनियत से मशहूर थे। हज़रत अबू तालिब के बाद 'सिक़ाया' अर्थात हाज़ियों को पानी पिलाना उनके ज़िम्मे था। अक़बा के मक़ाम पर जब अंसार की बैअत हुई तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह थे और जंग-ए-हुनैन में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ साबित-क़दम रहे। बत्तीस या तैंतीस हिजरी को उनकी वफ़ात हुई। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के क़बूल-ए-इस्लाम के मुतअल्लिक़ मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं। बाज़ के नज़दीक उन्होंने हिजरत से पहले इस्लाम क़बूल कर लिया था। बाज़ के नज़दीक उन्होंने जंग-ए-बद्र से पहले इस्लाम क़बूल किया था और बाज़ के नज़दीक उन्होंने जंग-ए-ख़ैबर के क़रीब इस्लाम क़बूल किया और बाज़ कहते हैं कि फ़तह-ए-मक्का से पहले इस्लाम क़बूल किया। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु की तहक़ीक़ के अनुसार बैअत-ए-अक़बा सानिया तक उन्होंने इस्लाम क़बूल नहीं किया था। चुनांचे आप रज़ियल्लाहु अन्हु बैअत-ए-अक़बा सानिया के ज़िम्मे में लिखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने चचा अब्बास को साथ लिया जो अभी तक मुशरिक थे मगर आप से मुहब्बत रखते थे। ज़्यादा ग़ालिब इमकान है कि हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने जंग-ए-बद्र से पहले तक इस्लाम क़बूल कर लिया होगा। अलबत्ता इस बात पर तमाम मुअर्रिख़ीन और सीरत निगार मुत्तफ़िक़ हैं कि मक्का में ही इस्लाम क़बूल कर लिया था लेकिन इस्लाम का इज़हार नहीं किया था ताकि मक्का और अहले मक्का की ख़बरें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुँचती रहें और यह भी रिवायत में मिलता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु का मक्का में ठहरे रहना ज़्यादा मुफ़ीद है।

(अल-इसतीआब फी मअरिफ़तिल अस्हाब, जिल्द 2, पृष्ठ 810-812, 817)(असदुल ग़ाबा, जिल्द 3, पृष्ठ 163-164, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)(सहाबा कराम व ताबेईन की ज़िंदगियों का तआरुफ़, तालीफ़ मुहम्मद नासिरुद्दीन, पृष्ठ 588)(मुंतख़ब सीरत-ए-मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, प्रोफ़ेसर डॉ. अब्दुल अज़ीज़ बिन इब्राहीम अल-उमरी, पृष्ठ 393)(सीरत ख़ातमुन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए., पृष्ठ 228)

फ़तह-ए-मक्का के बारे में हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का एक ख़्वाब भी था जिसका ज़िक्र यूँ मिलता है कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अपना ख़्वाब बयान करते हुए अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मुझे ख़्वाब दिखाया गया है और मैंने ख़्वाब में आप को देखा कि हम मक्का के क़रीब हो गए हैं। एक कुतिया भौंकते हुए हमारी तरफ़ आई। फिर जब हम उसके क़रीब हुए तो वह पीठ के बल लेट गई और उससे दूध बहने लगा। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन मक्का वालों का शर दूर हो गया और नफ़ा क़रीब हो गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह ताबीर फ़रमाई। वह तुम्हारी क़राबत-ए-दारी का वास्ता देकर तुम्हारी पनाह में आएँगे और तुम उनमें से बाज़ से मिलने वाले हो। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया कि तुम अबूसुफ़ियान को पाओ तो उसे क़त्ल न करना। यह दूसरे अबूसुफ़ियान हैं।

(दलाइलुन नुबूव्वा लिल बैहक़ी, जिल्द 5, पृष्ठ 48, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)

बहरहाल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लश्कर का सफ़र जारी रहा और मर्रुज़ ज़हरान में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पड़ाव फ़रमाया। लिखा है कि नबी पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेहतरीन फ़ौजी हिक्मत-ए-अमली और दुआओं के सबब इतना बड़ा मोजिज़ा रौनुमा होता है कि मदीना से चलने वाला दस हज़ार का लश्कर तक़रीबन चार सौ किलोमीटर का सफ़र करता हुआ मक्का के ऐन पाँच मील के फ़ासिले पर डेरे लगा चुका है लेकिन अभी तक मक्का वालों को कानों कान ख़बर भी नहीं पहुँची। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इशा के वक़्त मर्रुज़ ज़हरान में पड़ाव किया जो मक्का और उस्फ़ान के दरमियान मक्का से पाँच मील के

फ़ासिले पर एक मक़ाम है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को हुक्म दिया तो उन्होंने दस हज़ार आगें रोशन कीं। आप ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को लश्कर की निगहदाश्त के लिए मुक़र्रर किया।

(सुबुलुल हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 213-214, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)
(माख़ूज़ इनसाइक्लोपीडिया सीरतुन नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, पृष्ठ 188, दारुस्सलाम)(मुअज्जमुल बुलदान, जिल्द 5, पृष्ठ 123, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लामी लश्कर के बारे में लिखते हैं कि किस तरह इस्लामी लश्कर के बग़ैर किसी को ख़बर हुए मक्का पहुँचने के सामान हुए। कहते हैं कि "अहज़ाब की तारीख़ के सिवा इतना बड़ा लश्कर अरब की तारीख़ में तैयार नहीं हुआ। अहज़ाब में दस-बारह हज़ार आदमी था। गोया अरब की तारीख़ में इतने बड़े लश्कर की यह दूसरी मिसाल थी।" जो मुसलमानों का था "लेकिन मदीना से इतना बड़ा लश्कर निकलता है और किसी को इसकी ख़बर तक नहीं होती और फिर अल्लाह तआला मोजिज़ाना तौर पर यह दिखाता है कि मैं इस नौबतख़ाने को बजाता हूँ जो मेरा है और इस नौबतख़ाने को तोड़ रहा हूँ जो उनका है। चुनांचे जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निकले तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ मेरे ख़ुदा! मैं तुझसे दुआ करता हूँ कि तू मक्का वालों के कानों को बहरा कर दे और उनके जासूसों को अंधा कर दे। न वह हमें देखें और न उनके कानों तक हमारी कोई बात पहुँचे। चुनांचे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निकले। मदीना में सैकड़ों मुनाफ़िक़ मौजूद था लेकिन दस हज़ार का लश्कर मदीना से निकलता है और कोई इत्तिला मक्का में नहीं पहुँचती।"

(सीरत रूहानी (7) अनवारुल उलूम, जिल्द 24, पृष्ठ 262)

वहाँ गो सात हज़ार ही थे लेकिन फिर भी बहुत बड़ी तादाद थी और रास्ते में शामिल होते गए लेकिन मदीना वालों को, मुनाफ़िक़ों को फिर भी तौफ़ीक़ नहीं हुई कि वह ख़बर पहुँचा सकें। जैसा कि बयान हुआ है कि अभी तक क़ुरैश या अहले मक्का को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रवानगी बल्कि मक्का के क़रीब तक आ जाने की कोई ख़बर नहीं पहुँची। वह इस बात से फ़िक्रमंद ज़रूर थे कि आप उन पर हमला आवर होंगे लेकिन उन्हें उम्मीद नहीं थी कि मुसलमान उन पर हमला कर सकते हैं। अलबत्ता अहले मक्का किसी क़दर चौकन्ने ज़रूर हो गए थे और वह रात के वक़्त भी इर्द-गिर्द का अहवाल देखने के लिए गश्त करते रहते थे। इसी तरह एक रात अबूसुफ़ियान मक्का के दो सरदारों हकीम बिन हिज़ाम और बुदैल बिन वरक़ा के साथ गश्त कर रहे थे। उन्होंने लश्कर, ख़ैमे और आग देखी। गोया कि वह अरफ़ात की आग हो। अब वह आपस में अंदाज़े लगाते हुए कहने लगे कि बनू कअब अर्थात ख़ुज़ाअ होंगे। उन्हें अभी ताज़ा होने वाली जंग ने मुश्तैल कर दिया है। फिर ख़ुद ही कहने लगे - अंदाज़े लगा रहे थे ना - कि उनकी तादाद इतनी नहीं है। वह नहीं हो सकते। फिर कहने लगे कि बनू हवाज़िन होंगे। फिर ख़ुद ही नफ़ी कर दी कि वह भी नहीं हो सकते। इसी तरह अंदाज़े लगा रहे थे कि उन्होंने घोड़ों के हिनहिनाने और ऊँटों की आवाज़ें सुनीं। इस सब ने उन्हें शदीद ख़ौफ़ज़दा कर दिया।

(माख़ूज़ सुबुलुल हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 213-214, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)
(फ़तह-ए-मक्का, बाशमील, पृष्ठ 199, नफ़ीस अकादमी, कराची)

अभी यह बातें कर रहे थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जासूस जो इर्द-गिर्द के हालात का जाएज़ा लेते हुए पहरा दे रहे थे, उन्होंने उनको पकड़ लिया और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश करने के लिए ले गए। एक रिवायत के अनुसार अल्लाह तआला ने कश्फ़ी तौर पर अबूसुफ़ियान के क़रीब आने की आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर दी थी। चुनांचे हज़रत अबुलैला रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हम मर्रुज़ ज़हरान के मक़ाम पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अबूसुफ़ियान अराक में है जो मक्का के क़रीब एक वादी है, उसे पकड़ लाओ।" हम वहाँ गए और उसे पकड़ लिया। इब्न उक़्बा ने लिखा है कि अबूसुफ़ियान, हकीम बिन हिज़ाम और बुदैल बिन वरक़ा को इल्म तक न हुआ यहाँ तक कि सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के उस गिरोह ने उन्हें जा पकड़ा जिनको आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जासूस के तौर पर भेजा था। उन्होंने उनके ऊँटों की नकेलें पकड़ लीं। अबूसुफ़ियान वग़ैरह ने पूछा: "तुम कौन लोग हो?" उन्होंने कहा: "यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा हैं।" अबूसुफ़ियान ने कहा: "क्या कभी ऐसा भी हुआ है कि इतना बड़ा लश्कर किसी क़ौम के दरमियान उतरा हो लेकिन वह उसे जानते न हों? बग़ैर इत्तिला के इतना बड़ा लश्कर किस तरह आ गया।"

दूसरी रिवायत में है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मर्रुज़ ज़हरान पहुँचे तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का दिल अहले मक्का के लिए नर्म हुआ। चुनांचे वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सफ़ेद शहबा नामी खच्चर पर सवार होकर मक़ाम अराक तक आए और दिल में सोचा कि शायद कोई आदमी मिल जाए जो मक्का वालों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आमद की इत्तिला दे दे और उनसे कहे कि वह आकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अमन की दरख़्वास्त करें क़ब्ल इसके कि आप बज़ोर ताक़त मक्का में दाख़िल हों। वह अभी यह बात सोच ही रहे थे कि उन्होंने अबूसुफ़ियान, हकीम बिन हिज़ाम और बुदैल बिन वरक़ा की आवाज़ें सुनीं। अबूसुफ़ियान कह रहा था: "मैंने आज तक न कभी ऐसी आग देखी है न फ़ौज।" और बुदैल कह रहा था: "अल्लाह की क़सम! यह ख़ुज़ाअ वालों की आग है। जंग की ख़्वाहिश ने उनके जज़्बात को भड़का दिया है।" अबूसुफ़ियान ने कहा: "अल्लाह की क़सम! ख़ुज़ाअ वाले कमज़ोर और तादाद में कम हैं। यह उनकी आग और फ़ौज नहीं हो सकती।" हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी आवाज़ें सुन लीं और उनको पहचान लिया और अबूसुफ़ियान ने भी उन्हें पहचान लिया। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु अबूसुफ़ियान को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले गए और उनके दोनों साथी वापस चले गए। अकेले अबूसुफ़ियान को ले गए, दूसरे साथियों को छोड़ दिया। और एक रिवायत में है कि हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले गए। दोनों तरह की रिवायतें हैं।

(माख़ूज़ सुबुलुल हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 214-216, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत)
(मुअज्जमुल बुलदान, मुतर्जिम डॉ. ग़ुलाम जीलानी बरक़, पृष्ठ 37, अल-फ़ैसल नाशिरान, लाहौर)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसका ज़िक्र इस तरह फ़रमाया है कि "इधर तो" मुसलमानों का "यह लश्कर मक्का की तरफ़ मार्च करता चला जा रहा था और उधर मक्का वाले इस ख़ामोशी की वजह से जो फ़ज़ा पर तारी थी, ज़्यादा से ज़्यादा ख़ौफ़ज़दा होते जाते थे। आख़िर उन्होंने मशवरा करके अबूसुफ़ियान को फिर इस बात पर आमादा किया कि वह मक्का से बाहर निकलकर पता तो ले कि मुसलमान क्या करना चाहते हैं। मक्का से एक मंज़िल बाहर निकलने पर ही अबूसुफ़ियान ने रात के वक़्त जंगल को आग से रोशन पाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दे दिया था कि तमाम ख़ैमों के आगे आग जलाई जाए। जंगल में दस हज़ार अशख़ास के लिए ख़ैमों के आगे भड़कती हुई आग एक हयबतनाक नज़ारा पेश कर रही थी। अबूसुफ़ियान ने अपने साथियों से पूछा: "यह क्या है? क्या आसमान से कोई लश्कर उतरा है?" क्योंकि अरब की किसी क़ौम का लश्कर इतना बड़ा नहीं है। उसके साथियों ने मुख़्तलिफ़ क़बाइल के नाम लिए लेकिन उसने कहा: "नहीं, नहीं। अरब के क़बाइल में से किसी क़ौम का लश्कर भी इतना बड़ा कहाँ हो सकता है।" वह यह बात कह ही रहा था कि अंधेरे में से आवाज़ आई: "अबू हंज़ला!" (यह अबूसुफ़ियान की कुंयत थी)। अबूसुफ़ियान ने कहा: "अब्बास! तुम यहाँ कहाँ?" उन्होंने जवाब दिया: "मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का लश्कर सामने है और अगर तुम लोगों ने जल्दी-जल्दी कोई तदबीर न की तो शिकस्त और ज़िल्लत तुम्हारे लिए बिल्कुल तैयार है।"

(दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, जिल्द 20, पृष्ठ 337-338)

यानी यही है कि अब सुलह की तरफ़ आ जाओ।

बहरहाल, इसके आगे तफ़्सील में मज़ीद भी है। काफ़ी लंबी इसकी तफ़्सीलें हैं, इंशाअल्लाह आइंदा बयान करूँगा। और जैसा कि मैं हमेशा कहता हूँ, दुआओं की तरफ़ तवज्जोह देते रहें। अल्लाह तआला दुनिया को फ़सादों से बचाए और अभी ऊपर-नीचे जो सूरत-ए-हाल हो रही है, अल्लाह तआला बेहतर करे कि यह बेहतरी की तरफ़ चली जाए। मज़ीद तबाही की तरफ़ न जाए।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनैशनल, 11 जुलाई 2025, पृष्ठ 2-6)

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

एक वाक़िफ़-ए-नौ बचे ने सवाल किया कि हज़ूर-ए-अनवर कैलिफ़ोर्निया कब तशरीफ़ लाएँगे?

इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि 'जब अल्लाह लाएगा। देखें कब आएँगे। एक दफ़ा तो हो चुका हूँ।'

एक वाक़िफ़-ए-नौ ने सवाल किया कि 'आप को ह्यूस्टन आकर कैसे लगा?'

इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि 'बड़ा अच्छा है। ख़ूबसूरत नज़ारा है। ह्यूस्टन के इर्द-गिर्द सारा ज़राई इलाक़ा है, बाग़ हैं, बाड़े हैं। अच्छी जगह है।'

एक वक़्फ़-ए-नौ बचे ने सवाल किया कि जमाअत अहमदिया अमेरिका किस तरह मजमूई तौर पर अपने आप को बेहतर कर सकती है?

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि 'मैं अपने दौरे के इख़्तिताम पर आप को बता दूँगा।'

एक बचे ने सवाल किया कि हज़ूर-ए-अनवर की अमेरिका के वाक़िफ़ीन-ए-नौ के लिए सब से ज़रूरी नसीहत क्या है?

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

'आप लोग मेरे ख़ुत्बे सुनते हैं? मैंने दो साल पहले कनाडा में ख़ुत्बा दिया था वही वाक़िफ़ीन-ए-नौ का चार्टर है। उसमें इकतीस नुक़्ते थे, उन पर अमल करो।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

'बाक़ी एक तो तुम लोग पाँच नमाज़ें बाक़ायदा पढ़ा करो और जहाँ-जहाँ नमाज़ सेंटर और मसाजिद हैं नमाज़ बाजमाअत पढ़ा करो, कुरआन करीम की तिलावत बाक़ायदा करो, अपनी दोस्तियाँ अच्छे लड़कों से रखो और पढ़ाई की तरफ़ तवज्जो दो। यह चार बातें याद रख लो और बाक़ी नुक़्ते उस ख़ुत्बे से ले लेना।'

एक वाक़िफ़-ए-नौ ने सवाल किया कि बहैसियत वक़्फ़-ए-नौ हमें आला तालीम की तरफ़ तवज्जो दिलाई जाती है और अमेरिका में तुलबा की तरफ़ से लिए जाने वाला तालीमी क़र्ज़ा अब 1.5 ट्रिलियन डॉलर हो गया है। एक तालिब इल्म पर तालीम के लिए हासिल किया गया क़र्ज़ा गाड़ी के क़र्ज़े से और दूसरे क़र्ज़ों से बढ़ जाता है ऐसे में हज़ूर-ए-अनवर अहमदी बच्चों को क्या नसीहत फ़रमाते हैं कि वह दरमियान-ए-तालीम अपने माली उमूर का किस तरह बेहतर तौर पर इंतज़ाम करें।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

'आला तालीम सिर्फ़ वाक़िफ़ीन-ए-नौ के लिए नहीं बल्कि हर अहमदी के लिए ज़रूरी है। वाक़िफ़ीन-ए-नौ को तालीम में सब से आगे होना चाहिए। हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि वह जो गवर्नमेंट या बैंक से तालीम के लिए क़र्ज़ा लेते हैं उन को मैं यही नसीहत करता हूँ कि उन्होंने जिस शोबे में तालीम हासिल की है उस शोबे में ही नौकरी तलाश करके काम करें और तक़रीबन तीन साल के लिए तजुर्बा हासिल करें और अपने क़र्ज़े को अदा करें। जब आप अपना पूरा क़र्ज़ा अदा कर चुकें तब आप अपने आप को वक़्फ़ के लिए पेश करें लेकिन इस दरमियान मर्कज़ को अपनी प्रोग्रेस से मुत्तलि रखें और इस के अलावा जैसे मैंने बयान किया है रोज़ाना पाँच नमाज़ों के बाजमाअत क़ियाम और तिलावत-ए-कुरआन का इंतज़ाम करें। अच्छे अख़्लाक़ का मुज़ाहिरा करें यह चीज़ें साथ-साथ होनी चाहिएँ। यह नहीं कि अगर आप किसी हॉस्पिटल में, या कम्पनी में या बहैसियत वकील काम कर रहे हैं तो आप अपने बुनियादी फ़रायज़ भूल जाएँ। इस का ख़ास ख़याल रखें। यह चीज़ें करें और अपना क़र्ज़ा अदा करें इस के बाद आगे के बारे में हिदायत ले सकते हैं।'

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

'तीसरी दुनिया के या ग़रीब मुमालिक के तुलबा को उन की आला तालीम के लिए हम ख़ुद भी क़र्ज़ा देते हैं।'

एक वक़्फ़-ए-नौ बचे ने सवाल किया कि क्या आप पर बराह-ए-रास्त अल्लाह तआला से वही होती है?

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

'अल्लाह तआला तो मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से बता देता है कि क्या करना है। दिल में डाल देता है, कोई बराह-ए-रास्त वही नहीं होती। वही सिर्फ़ नबियों को होती है।'

वाक़िफ़ीन-ए-नौ की यह क्लास आठ बज कर पंद्रह मिनट पर ख़त्म हुई। आख़िर में हज़ूर-ए-अनवर ने इस क्लास में शामिल होने वाले तमाम बच्चों को जाए नमाज़ अता फ़रमाई। बाद में तमाम बच्चों ने हज़ूर-ए-अनवर के साथ एक ग्रुप तस्वीर बनवाने की सआदत पाई।

बाद में एक वाक़िफ़-ए-नौ नौजवान अज़ीज़ सैयद नवास अहमद ने अज़ान दी। हज़ूर-ए-अनवर इस दरमियान मेहराब में खड़े रहे। अज़ान के बाद हज़ूर-ए-अनवर ने इस ख़ादिम को अपने पास बुलाया और दरयाफ़्त फ़रमाया कि 'क्या कर रहे हो?' इस पर नौजवान ने अर्ज़ किया कि 'डॉक्टर हूँ और रेज़िडेंसी कर रहा हूँ।' हज़ूर-ए-अनवर ने LOAN के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया कि 'कितना क़र्ज़ (LOAN) है और कब तक अदा हो जाएगा?' इस पर मौसूफ़ ने अर्ज़ किया कि 'बाज़ ऐसे तरीक़े भी हैं कि ख़िदमत के काम करें, रिफ़ाह-ए-आम का काम करें तो क़र्ज़ एडजस्ट हो जाता है और बाज़ सूरतों में कम भी हो जाता है।' इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया 'तो फिर घाना चले जाओ।'

बाद में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने नमाज़-ए-मग़रिब व इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर-ए-अनवर अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

अबू जहल दस्तक की आवाज़ सुनकर बाहर निकला, आपने फ़रमाया: "इस शख़्स का तुमने कुछ रुपये लिया हुआ है, वह फ़ौरन उसे अदा कर दो।" अबू जहल बिला-चों चरा अंदर गया और रुपये लाकर उसने उस शख़्स के हवाले कर दिए।

अबू जहल का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कहने पर एक शख़्स को उसके रुपये दे देना कोई ऐसी बात न थी जो छिपी रहती। जंगल की आग की तरह यह बात मक्का में फैल गई और लोगों में चर्चाएँ शुरू हो गईं कि अबुल हकम (अबू जहल) हमें तो कहता है मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बात न मानो और ख़ुद उससे इतना डर गया कि एक मिनट के अंदर रुपये देने के लिए तैयार हो गया। जब उसने यह बातें सुनीं तो वह कहने लगा: "ख़ुदा की क़सम, अगर तुम मेरी जगह होते तो तुम भी वही काम करते जो मैंने किया है, क्योंकि जब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आया तो मुझे उसके दाएँ और बाएँ दो मस्त ऊँट खड़े दिखाई दिए, जिन्हें देखकर मेरा दिल सख़्त ख़ौफ़ज़दा हो गया और मैंने समझा कि अगर मैंने उसकी बात न मानी तो यह दोनों ऊँट मुझे चीरकर खा जाएँगे।"

अब यह बात तो अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है कि उसे कोई ऐसा नज़ारा नज़र आया था या हक़ का रौब उस पर छा गया था, मगर बहरहाल जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हल्फ़ुल फ़ुज़ूल के मुआहिदा के एहतराम में एक मज़लूम शख़्स का हक़ दिलाने के लिए इंतिहाई ख़तरों की परवाह न करते हुए उसके पास गए तो सच्चाई के रौब ने उसकी शरारत की रूह को कुचल दिया और वह मज़लूम का हक़ देने के लिए तैयार हो गया।

फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को वफ़ाए अहद का इतना पास था कि सुलह-ए-हुदैबिया के मौक़े पर जब यह मुआहिदा हुआ कि मक्का के लोगों में से कोई नौजवान मुसलमान हुआ तो उसे उसके रिश्तेदारों की तरफ वापस कर दिया जाएगा, लेकिन जो मुसलमान मक्का वालों की तरफ वापस जाएगा, उसे मक्का वाले वापस करने पर मजबूर नहीं होंगे। तो अभी इस मुआहिदा की स्याही भी सूखी नहीं हुई थी कि सुहैल जो मक्का वालों की तरफ से मुआहिदा कर रहा था, उसका अपना बेटा रस्सियों से जकड़ा हुआ और ज़ख़्मों से चूर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने आकर गिरा और उसने कहा: "या रसूलुल्लाह! मैं दिल से मुसलमान हूँ मगर मेरा बाप इस्लाम की वजह से मुझे तकलीफ़ें दे रहा है। आज मेरा बाप यहाँ आया तो मैं मौक़ा पाकर निकल भागा और यहाँ आ गया।"

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अभी उसे कोई जवाब नहीं दिया था कि उसका बाप कहने लगा: "मुआहिदा हो चुका है, अब इसे मेरे साथ जाना पड़ेगा।" अबू जंदल की हालत उस वक़्त इतनी दर्दनाक थी कि मुसलमानों की आँखों से ख़ून के आँसू बह रहे थे। ख़ुद अबू जंदल ने भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया: "या रसूलुल्लाह! क्या आप मुझे फिर मक्का वालों की तरफ वापस कर देंगे ताकि यह लोग मुझे पहले से भी ज़्यादा तकलीफ़ दें?" मगर आपने फ़रमाया: "ख़ुदा के रसूल मुआहिदा नहीं तोड़ा करते। तुम्हें बहरहाल वापस जाना पड़ेगा। तुम सब्र से काम लो और अल्लाह तआला पर तवक्कुल करो।" चुनांचे वह मक्का में वापस भेज दिया गया।

फिर जब आप मदीना पहुँचे तो मक्का का एक और नौजवान अबू बसीर रज़ियल्लाहु अन्हु आपके पीछे-पीछे दौड़ता हुआ मदीना पहुँचा मगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे भी मुआहिदा के अनुसार मक्का वापस जाने पर मजबूर किया।

इसी तरह वफ़ाए अहद का आपको इतना ख़्याल था कि एक दफ़ा एक हुकूमत का दूत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास कोई पैग़ाम लेकर आया और आपकी सोहबत में कुछ दिन रहकर इस्लाम की सच्चाई का क़ाइल हो गया। उसने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया: "या रसूलुल्लाह! मैं अपने इस्लाम का इज़हार करना चाहता हूँ।" रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "यह मुनासिब नहीं। तुम अपनी हुकूमत की तरफ से एक इम्तियाज़ी अहद पर मामूर हो। तुम इसी हालत में वापस जाओ और वहाँ जाकर अगर तुम्हारे दिल में इस्लाम की मुहब्बत फिर भी क़ायम रहे तो दोबारा आकर इस्लाम क़बूल करो।"

फिर मुसलमानों को भी वफ़ाए अहद का इतना ख़्याल रहता था कि एक दफ़ा कुफ़्फ़ार ने ऐन जंग के दरमियान धोखे से एक हब्शी मुसलमान से मुआहिदा कर लिया और उन्होंने क़िले के दरवाज़े खोल दिए। जब लश्कर आगे बढ़ा ताकि क़िले में दाख़िल हो तो उन्होंने कहा: "हमारा तो तुमसे मुआहिदा हो चुका है।" कमांडर ने कहा: "मेरे साथ कोई मुआहिदा नहीं हुआ।" उन्होंने कहा: "हमने एक हब्शी से मुआहिदा कर लिया था और उसने कुछ शर्तों पर हमें अमन दिया था।" कमांडर ने कहा: "उसे मुआहिदा का क्या अख़्तियार था? मुआहिदा तो मेरे साथ होना था।" उन्होंने कहा: "हम नहीं जानते, हम आपसे मुआहिदा कर चुके हैं।"

जब यह इख़्तिलाफ़ बढ़ा तो इस्लामी फ़ौज के कमांडर ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह सारा वाक़िया लिख दिया और दरयाफ़्त किया कि अब क्या किया जाए? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया: "अल्लाह तआला ने वफ़ाए अहद को बड़ी अज़्मत व अहमियत दी है। सो तुम इस अहद को पूरा करो और उस वक़्त तक इस अहद पर क़ायम रहो जब तक कि फ़रीक़-ए-सानी ख़ुद इस अहद की ख़िलाफ़वर्ज़ी न करे।"

ग़रज़ इस्लाम अमानत और ईमानदारी तथा मुआहिदात का पालन करने को ख़ास अहमियत देता है और फ़रमाता है कि वही मोमिन कामयाब हो सकते हैं जो अमानत और वफ़ाए अहद में भी बेहतरीन नमूना पेश करने वाले हों।

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 6, पृष्ठ 133-134, मतबूआ क़ादियान 2010)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

इबादतों और दुआओं को क़ुबूल करवाना है तो इसके लिए बुनियादी चीज़ यही है कि इंसान बुराइयों से रुके और नेकियों को अपनाए। यह तक़्वा है

याद रखो, अब जिसका सिद्धांत दुनिया है, फिर वह इस जमाअत में शामिल है, परन्तु अल्लाह तआला के नज़दीक वह इस जमाअत में नहीं है। अल्लाह तआला के नज़दीक वही इस जमाअत में दाख़िल और शामिल है जो दुनिया से दस्तबरदार है

आग है पर आग से वह सब बचाए जाएँगे,
जो कि रखते हैं ख़ुदाए ज़ुलजलाल से प्यार

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि आख़िरी ज़माने में एक मुस्लिह, एक रिफॉर्मर आएगा जो इस्लाम का इह्या-ए-नौ करेगा और इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम बताएगा

26 अक्टूबर 2018, शुक्रवार

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छह बजे "मस्जिद बैतुस समी" में तशरीफ लाकर फज्र की नमाज़ अदा की। नमाज़ के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ ले गए।

सुबह हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक और ख़तों को मुलाहिज़ा फ़रमाया और हिदायतों से नवाज़ा। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न दफ़्तरी अमूर की अंजाम दही में मसरूफ रहे।

आज जुम्आतुल मुबारक का दिन था। ह्यूस्टन (Houston) की सरज़मीन से खलीफ़तुल मसीह का यह पहला खुत्बा-ए-जुमुआ था जो MTA इंटरनेशनल के ज़रिए सारी दुनिया में सीधा Live प्रसारित हुआ।

ह्यूस्टन के अलावा अमरीका की दूसरी विभिन्न जमाअतों से अहबाब-ए-जमाअत बड़े लंबे और तवील सफर तय करके अपने प्यारे आक़ा की इक़्तिदा में नमाज़-ए-जुमुआ अदा करने के लिए पहुंचे।

जमाअत Tennessee से आने वाले अहबाब 830 मील का फ़ासला 12 घंटे में तय करके पहुंचे थे। Georgia से आने वाले अहबाब 13 घंटे का सफर कार के ज़रिए तय करके पहुंचे थे। इसी तरह Kentucky से आने वाले 1050 मील का सफर 16 घंटों में तय करके पहुंचे। जबकि मियामी (Miami) से आने वाले हवाई जहाज़ से तीन घंटे का सफर तय करके पहुंचे।

बाल्टीमोर, लॉस एंजेलिस, Laurel और सिल्वर स्प्रिंग की जमाअतों से आने वाले अहबाब और फ़ैमिलीज़ हवाई जहाज़ से साढ़े तीन घंटे का सफर तय करके पहुंचीं।

बॉस्टन (Boston) और (Bay Point) से जो अहबाब ह्यूस्टन पहुंचे वे हवाई जहाज़ से 4 घंटे का लंबा सफर तय करके पहुंचे।

नमाज़-ए-जुमुआ की अदायगी के लिए विभिन्न दूर की जमाअतों से अहबाब की एक बहुत बड़ी तादाद गुरुवार की शाम तक ह्यूस्टन पहुंच गई थी। जुमुआ की अदायगी का इंतज़ाम मस्जिद के अलावा विभिन्न मार्कीज़ लगाकर किया गया था। नमाज़-ए-जुमुआ में शामिल होने वालों की तादाद अठारह सौ से ज़्यादा थी।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने एक बजे "मस्जिद बैतुस समी" में तशरीफ लाकर खुत्बा-ए-जुम्आ इरशाद फ़रमाया। (खुत्बा-ए-जुमुआ का मुकम्मल मतन अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल 9 से 15 नवंबर 2018 के पेज 5 से 9 पर शाया हो चुका है।) इस खुत्बा-ए-जुमुआ के कुछ नुक़्ते निम्नलिखित हैं:

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया:

बदज़न्नी अगर दूर हो जाए तो हमारे समाज के आधे फ़साद और झगड़े और रंजिशें दूर हो जाएं। इकाई पैदा हो जाए, वहदत पैदा हो जाए।

इबादतों और दुआओं को क़ुबूल करवाना है तो इसके लिए बुनियादी चीज़ यही है कि इंसान बुराइयों से रुके और नेकियों को अपनाए। यह तक़्वा है।

सिर्फ़ एतक़ाद काम नहीं आएगा। असल चीज़ अमल है जिसकी हमें कोशिश करनी चाहिए। पस इस्लाम लाना काफ़ी नहीं है, अहमदी होना काफ़ी नहीं है, अपने आप को अल्लाह तआला के हुक्मों के अनुसार ढालना ज़रूरी है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मेरे सहाबा सितारों की मानिंद हैं, जिसके पीछे भी चलोगे वह तुम्हें सही रास्ते की तरफ़ ले जाएगा।

"याद रखो, अब जिसका सिद्धांत दुनिया है, फिर वह इस जमाअत में शामिल है, परन्तु अल्लाह तआला के नज़दीक वह इस जमाअत में नहीं है। अल्लाह तआला के नज़दीक वही इस जमाअत में दाख़िल और शामिल है जो दुनिया से दस्तबरदार है।"

"ख़ुदा तआला कभी उस शख़्स को जो माल उसी का हो जाता है, ज़ाए नहीं करता, बल्कि वह ख़ुद उसका मुतकफ़्फ़िल हो जाता है।"

"यह कभी नहीं हुआ और न होगा कि अल्लाह तआला का सच्चा फ़रमाबरदार हो और वह या उसकी औलाद तबाह-ओ-बर्बाद हो जाए।"

"यह बै'त उस वक़्त काम आ सकती है जब दीन को मुक़द्दम कर लिया जाए और उसमें तरक़्क़ी करने की कोशिश हो।"

"यह आफ़ात कोई मामूली आफ़ात नहीं हैं। इनकी पेशगोइयाँ सौ साल पहले हो चुकी हैं। और इनसे बचने का एक ही तरीक़ा है कि इंसान अल्लाह तआला की तरफ़ आए।

आग है पर आग से वह सब बचाए जाएँगे,
जो कि रखते हैं ख़ुदाए ज़ुलजलाल से प्यार।"

"ख़ुदा तआला की कुछ बातों को न मानना, उसकी सभी बातों को ही छोड़ना होता है।"

"अल्लाह तआला करे कि हम बै'त का हक़ अदा करते हुए अपने अंदर पाक तब्दीलियाँ पैदा करने वाले बनें।"

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुत्बा-ए-जुमुआ दो बजकर पाँच मिनट तक जारी रहा। बाद में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़-ए-जुमुआ के साथ नमाज़-ए-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए। अमेरिकी कांग्रेस के सदस्य माइकल मेककॉल साहिब हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के लिए आए हुए थे। वेसुफ़ के साथ उनके दफ़्तर के दो अहदेदार, प्रेस सेक्रेटरी और मुआविन आला भी मुलाक़ात में शामिल थे।

कांग्रेसमैन ने अर्ज़ किया कि हम हज़ूर को अमेरिका में ख़ुश आमदीद कहते हैं।

वह यह बताते हुए ख़ुशी महसूस कर रहे हैं कि उनके दफ़्तर के राब्ते की वजह से अमेरिकी विभाग-ए-दाख़िला और इंतज़ामिया ने हज़ूर-ए-अनवर के दौरे के लिए मुकम्मल ख़ास तआवुन की यक़ीन दहानी कराई है और यह हज़ूर-ए-अनवर के शायान-ए-शान भी है, क्योंकि हज़ूर-ए-अनवर इंतिहापसन्दी की मुख़ालिफ़त करते हैं और इसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते हैं और दुनिया में इतिदालपसन्दी और अम्न के क़ियाम के अलमबरदार हैं।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "आपने जिन ख़्यालात का इज़हार किया है, उस पर आपका शुक्रिया।" हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि "मैं तो इस्लाम की अस्ल और हक़ीक़ी तालीम ही बयान करता हूँ। आजकल इंतेहापसन्दों और दहशतगर्दों की जानिब से जो कार्रवाइयाँ हो रही हैं, उनका इस्लाम की उस हक़ीक़ी तालीम से कोई तअल्लुक़ नहीं है।" हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, "इस्लाम के अस्ल मायने ही अम्न के हैं, सलामती हैं।"

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि आख़िरी ज़माने में एक मुस्लिह, एक रिफॉर्मर आएगा जो इस्लाम का इह्या-ए-नौ करेगा और इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम बताएगा। चुनाँचे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार बानी जमाअत अहमदिया ने इस्लाम की असली और हक़ीक़ी तालीम को दुनिया के सामने पेश किया और आज जमाअत अहमदिया इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम, अम्न की तालीम हर जगह पेश कर रही है। हम मुख़ालिफ़ीन के एतिराज़ात का जवाब देने में कोई अस्लहा इस्तेमाल नहीं करते, बल्कि इस्लाम की सच्ची तालीम और दलील इस्तेमाल करते हैं और दलील से इस्लाम का दिफ़ा करते हैं।

बाद में मेंबर कांग्रेस ने इंतिहापसन्दों और दहशतगर्दों की तरफ़ से होने वाली कार्रवाइयों का ज़िक्र किया।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "जो लोग radicalise हो रहे हैं, उनकी कोई वजह है। नाम निहाद मुसलमान उलमा उनको ऐसी ग़लत तालीम देते हैं जिसका इस्लाम से कोई तअल्लुक़ नहीं है। न वह तालीम क़ुरआन करीम में है और न नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अमल से ज़ाहिर है। यह ग़लत तालीम इन लोगों को इंतिहापसन्द बना रही है।"

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "एक तो तालीमी मेयार की कमी की वजह से लोग मुल्लाओं के पीछे चलते हैं और जो पढ़े-लिखे लोग हैं, उनको भी दीनी इल्म नहीं होता, वे भी जो मुल्ला कहता है, उसके पीछे चल पड़ते हैं। और फिर मआशी बदहाली और रोज़गार की कमी भी इंतिहापसन्दी को फैलने का मौक़ा फराहम करती है। इसका हल यही है कि मुसलमानों के लिए तालीम और रोज़गार के मौक़े फराहम किए जाएँ।"

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "आप अहमदियों में ऐसा नहीं देखेंगे कि उनमें कोई इंतिहापसन्दी की तरफ़ माइल हो। क्योंकि अहमदी इस्लाम की सच्ची और हक़ीक़ी तालीम को जानते हैं। इसलिए वे radicalise नहीं होते। दुनिया के किसी भी मुल्क में आबाद जो अहमदी है, उसका रवैया और करदार और अमल एक जैसा ही है, क्योंकि वह इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम पर अमल पीरा है।"

कांग्रेसमैन ने इंतिहापसन्दी और पुर-तशद्दुद कार्रवाइयों के ख़िलाफ़ जमाअत अहमदिया के करदार की अहमियत को बयान किया और कहा कि मुस्लिम दुनिया में हज़ूर-ए-अनवर ही हक़ीक़ी रहनुमा हैं और वह चाहते हैं कि तमाम मुसलमान हज़ूर-ए-अनवर के इरशादात को समझें और उस पर अमल करें। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "इंतिहापसन्दी के ख़िलाफ़ जंग का हल शायद हमारी ज़िंदगी में तो न हो, लेकिन आने वाली नस्ल की ज़िंदगी में शायद हो जाए।"

ग्वाटेमाला में अस्पताल के क़ियाम और उसके इफ़्तिताह का ज़िक्र हुआ। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि "हमने वहाँ यह अस्पताल सिर्फ़ अवाम की ख़िदमत के लिए खोला है। हमने वहाँ से कोई रक़म नहीं कमाई। हमने अफ़्रीका के मुख़्तलिफ़ मुल्कों में अस्पताल और बहुत ज़्यादा स्कूल खोले हैं और बिला-तमीज़ रंग-ओ-नस्ल, मुसलमान, ईसाई सब तुलबा पढ़ते हैं।"

यहाँ अमेरिका में आने के मक़सद के हवाले से बात हुई तो हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "तीन मसाजिद के इफ़्तिताह का प्रोग्राम था। फिर ग्वाटेमाला में अस्पताल के इफ़्तिताह का प्रोग्राम था। अपनी कम्युनिटी के लोगों से मिलना था और फिर आप जैसे शुरफ़ा से मिलना था।"

रुक्न-ए-कांग्रेस माइकल मैककॉल ने अहमदिया मुस्लिम कॉकस (Caucas) का ज़िक्र किया तो हज़ूर-ए-अनवर ने उनसे दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या वह उसके चेयरमैन हैं? तो उन्होंने बताया कि उनके करीबी दोस्त रुक्न-ए-कांग्रेस पीटर किंग (Peter King) ऑफ़ न्यूयॉर्क इसके चेयरमैन हैं।

जलसा सालाना यूके का ज़िक्र होने पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि "दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुल्कों से मेहमान आते हैं, चालीस हज़ार के लगभग तादाद हो जाती है। एक फ़ार्म में जलसा का इनिक़ाद होता है और एक आरज़ी विलेज (village) तामीर किया जाता है। इस सारे काम का सत्तर फ़ीसद वॉलंटियर्स (volunteers) करते हैं। वहाँ पुलिस ड्यूटी पर आती है तो कहती है कि हमारे यहाँ आने की ज़रूरत ही नहीं है। आपके नौजवानों ने सिक्योरिटी का सारा काम संभाला हुआ है।"

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "यहाँ भी बाहर पुलिस है, वह अपनी ड्यूटी पर हैं। अंदर से तो किसी इंतज़ाम, सिक्योरिटी का कोई मसला नहीं है, बाहर से हो सकता है।"

कांग्रेसमैन ने हज़ूर-ए-अनवर के लंदन क़ियाम और पाकिस्तान में जमाअत पर रवा रखे जाने वाले मज़ालिम और हुक़ूक़ से महरूमी का ज़िक्र किया। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि "लंदन में मुक़ीम हूँ और पाकिस्तान में परसिक्यूशन और अपने फ़रायज़-ए-मंसबी अदा न कर सकने की वजह से नहीं जा सकता।"

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "पाकिस्तान में 1974 में उस वक़्त के वज़ीर-ए-आज़म ज़ुल्फ़िक़ार अली भुट्टो ने क़ानून बनाया था कि अहमदी क़ानूनी और आईनी तक़ाज़ों के पेश-ए-नज़र ग़ैर-मुस्लिम हैं।" हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि "यहाँ लंदन आने से पहले मैं रबवाह में रहा हूँ। रबवाह, लाहौर से 100 मील के फ़ासले पर है और इस्लामाबाद से करीब ढाई सौ मील का फ़ासला है। रबवाह की 97 फ़ीसद आबादी अहमदी है। इसके बावजूद वहाँ की लोकल कौंसिल में हमारा कोई मेंबर नहीं है। वहाँ की लोकल कमेटी की इंतज़ामिया में हमारा कोई मेंबर नहीं है। अब वहाँ दो फ़ीसद अक़लियत हम पर मुसल्लत है और हम पर रबवाह में हुकूमत कर रही है।"

वोट के हक़ से महरूमी के हवाले से हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि "हुकूमत ने हमारे लिए यह शर्त रखी है कि अपने आप को ग़ैर-मुस्लिम तस्लीम करो तो फिर वोट का हक़ मिलेगा।" हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, "आप जो मुझे समझते हैं, समझें, लेकिन मुझको मजबूर नहीं कर सकते कि मैं अपने आप को ग़ैर-मुस्लिम कहूँ।"

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "मैं पाकिस्तान में रहता था, वहाँ जमाअत का हेड (नाज़िर आला) था। जमाअत के ख़िलाफ़ जो क़वानीन हैं, उनकी वजह से मैं ख़ुद भी ग्यारह दिन जेल में रहा हूँ। जबकि मैंने कोई ग़लत काम नहीं किया, किसी को मारा नहीं, किसी मुख़ालिफ़ ने झूठी शिकायत कर दी। फिर बाद में मजिस्ट्रेट ने देखा कि शिकायत झूठी है और ग़लत तौर पर क़ैद किया गया है तो रिहाई अमल में आई।"

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "ज़िया-उल-हक़ ने अपने दौर में जमाअत के ख़िलाफ़ सख़्त क़वानीन बनाए। अस्सलामु अलैकुम नहीं कह सकते, तीन साल क़ैद की सज़ा होगी। बच्चों के नाम मुसलमानों के नाम की तरह नहीं रख सकते, शादी कार्ड पर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखने की वजह से अहमदियों पर मुक़द्दमे बने। आजकल मुख़्तलिफ़ चार्जों की वजह से बहुत से अहमदी जेल में हैं।"

हम अपनी मस्जिदों में जाते हैं, अज़ान नहीं कह सकते, मस्जिद को मस्जिद नहीं कह सकते।

रुक्न-ए-कांग्रेस ने इस बात पर हैरानी का इज़हार किया कि वज़ीर-ए-आज़म ज़ुल्फ़िक़ार अली भुट्टो ने क्यों जमाअत अहमदिया को ग़ैर-मुस्लिम करार दिलवाया जबकि वह ख़ुद को एक सेक्युलर रहनुमा कहता था।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "एक तो यह कि भुट्टो ने सोचा कि अहमदी मुल्क में अहमियत इख़्तियार करते जा रहे हैं। इलेक्शन में अहमदिया कम्युनिटी ने उसके लिए काम किया था और ख़ास कर उन इलाक़ों में किया था जहाँ उसको कोई जानता न था। हमारी जमाअत एक मुनज़्ज़म जमाअत है। हमारे पास वोट थे। चुनाँचे अहमदिया कम्युनिटी ही भुट्टो को इस स्टेज पर लाई थी कि उसने हुकूमत बनाई।

फिर दूसरी बात यह है कि भुट्टो मुस्लिम वर्ल्ड का लीडर बनना चाहता था। उसने पाकिस्तान में समिट कॉन्फ्रेंस का भी इनिक़ाद किया जिसमें मुस्लिम मुमालिक के सरबराहान शामिल हुए। भुट्टो ने सोचा कि अगर अहमदियों को ग़ैर-मुस्लिम करार दे दूँ तो मुसलमान मुमालिक में मेरा एक मक़ाम बन जाएगा। यह सारा मामला पॉलिटिकल तौर पर हुआ।"

हज़ूर-ए-अनवर के लंदन आने के हवाले से बात हुई तो हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि "मैं तो चौथे ख़लीफ़ा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अर-राबे रहमहुल्लाह की वफ़ात पर चंद दिन के लिए लंदन आया था। मजलिस-ए-इंतिख़ाब-ए-ख़िलाफ़त में शामिल था। मैं तो वापस जाने के लिए आया था। ख़लीफ़तुल मसीह मुंतख़िब हुआ। अब मैं पाकिस्तान वापस नहीं जा सकता था। वहाँ किसी को अस्सलामु अलैकुम नहीं कह सकता, ख़ुत्बा-ए-जुमुआ नहीं दे सकता था, अपनी ज़िम्मेदारी बहैसियत ख़लीफ़तुल मसीह अदा नहीं कर सकता था।"

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "आज मैंने यहाँ ह्यूस्टन में ख़ुत्बा-ए-जुमुआ दिया है जो सारी दुनिया में यहाँ से टेलीकास्ट हुआ है और इसका आठ ज़बानों में अनुवाद हुआ है। जबकि पाकिस्तान में यह नहीं हो सकता था।"

इस पर कांग्रेसमैन ने कहा: "इस सूरत-ए-हाल में हज़ूर-ए-अनवर अगर पाकिस्तान गए तो उनको गिरफ़्तार किया जा सकता है।" इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि "हाँ, ऐसा ही होता।"

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "पाकिस्तान में मुल्लाओं का ज़ोर है। मुशर्रफ़ जब सदर था तो उसने फ़ैसला किया था कि मुश्तरका इंतिख़ाब होगा और अहमदी पाकिस्तान के शहरी होने के लिहाज़ से वोट दे सकते हैं तो इस फ़ैसले पर मुल्लाओं ने बहुत शोर मचाया तो उसने मुल्लाओं के सामने घुटने टेक दिए।"

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "जो भी हुकूमत हो वह मुल्लाओं के दबाव में आ

जाती है। अब इमरान ख़ान की हुकूमत है, उसने भी मुल्लाओं के सामने घुटने टेक दिए हैं। प्रोफ़ेसर आतिफ़ मियाँ जो यहाँ अमेरिका की एक यूनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर हैं, उनको इमरान ख़ान ने हुकूमत की इकोनॉमिक एडवाइज़री काउंसिल (Economic Advisory Council) में रखा था। इस पर मुल्लाओं ने शोर मचाया कि यह अहमदी है, इसे निकालो। चुनाँचे हुकूमत ने निकाल दिया और कहा कि अपना इस्तीफ़ा दे दो। हम मुल्लाओं का मुक़ाबला नहीं कर सकते।"

मुलाक़ात के आख़िर में रुक्न-ए-कांग्रेस ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर-ए-अनवर दुनिया से इंतिहापसन्दी के ख़ात्मे और अमेरिका में अम्न के लिए ख़ास तौर पर दुआ करें। और दरख़्वास्त की कि हुज़ूर-ए-अनवर भी हमारे लिए दुआ करें। हुज़ूर-ए-अनवर ने दुआ की कि "अल्लाह तआला दुनिया से इंतिहापसन्दों का ख़ात्मा करे और दुनिया में अम्न क़ायम हो।"

इस रुक्न-ए-कांग्रेस ने अर्ज़ किया कि "तमाम मुस्लिम उम्मा को बल्कि तमाम दुनिया को हुज़ूर-ए-अनवर की रहनुमाई और पैग़ाम की ज़रूरत है।"

आख़िर में मौसूफ़ ने हुज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई। यह मुलाक़ात पाँच बजकर पंद्रह मिनट पर ख़त्म हुई।

बाद में प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला मस्जिद के बिरूनी हिस्से में तशरीफ़ ले आए और मस्जिद की बिरूनी दीवार में नस्ब एक यादगारी तख़्ती की नक़ाबकशाई फ़रमाई और दुआ करवाई। इस तख़्ती पर निम्नलिखित इबारत तहरीर की गई थी:

"30 जून 1998 बरोज़ मंगल हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अर-राबे रहमहुल्लाह ने इस मस्जिद का संग-ए-बुनियाद रखा। इस मस्जिद का इफ़्तिताह साबिक़ अमीर जमाअत अमरीका मुकर्रम डॉक्टर एहसानुल्लाह ज़फ़र साहिब ने बरोज़ जुम्आतुल् मुबारक 2 अप्रैल 2004 को किया। इस मौक़े पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित पैग़ाम भेजा:

'अल्हम्दुलिल्लाह कि जमाअत अहमदिया ह्यूस्टन को एक ख़ूबसूरत मस्जिद तामीर करने की तौफ़ीक़ मिली है। अल्लाह बहुत मुबारक फ़रमाए और तमाम माली क़ुरबानी करने वालों को जज़ाए-ए-ख़ैर दे और उनके अमवाल व नुफ़ूस में बरकत डाले। इसी तरह मसाजिद से वाबस्ता तमाम बरकात से इस इलाक़े, इस शहर और जमाअत अहमदिया के हर फ़र्द को फ़ैज़याब फ़रमाए।

मसाजिद की तामीर की अस्ल ग़रज़-ओ-ग़ायत ही यही है कि इनमें ख़ुदा के बन्दे ख़ुदाए वाहिद व यगाना की इबादत के लिए जमा हों और मसाजिद की अस्ल ज़ीनत इन नमाज़ियों के साथ ही वाबस्ता है। पस आपका अस्ल काम अब शुरू हुआ है कि आपने ख़ालिस अल्लाह की ख़ातिर इबादत करने वाले नमाज़ियों से इस मस्जिद को आबाद करना है। अल्लाह आपको अपने ख़ालिस इबादतगुज़ार बन्दों में शामिल करे और यह मस्जिद ऐसे ही इबादतगुज़ार बन्दों से पुर रहे।'

आज 21 अक्टूबर बरोज़ इतवार यह तख़्ती हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अल्-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पहले तारीख़ी दौरे की यादगार के तौर पर नस्ब की जा रही है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ह्यूस्टन के पहले तारीख़ी दौरे की यादगार में तख़्ती की नक़ाबकशाई

तख़्ती की नक़ाबकशाई के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए।

प्रोफ़ेसर क्रेग कॉन्सिडाइन (Craig Considine) माहिर-ए-सोशियोलॉजी राइस यूनिवर्सिटी अमेरिका और प्रोफ़ेसर इमरान अल-बदावी माहिर-ए-उलूम-ए-मशरिक़-ए-औसत और अरबी हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के लिए आए हुए थे। मुलाक़ात के इब्तिदा में दोनों प्रोफ़ेसर साहिबान ने अपना तआरुफ़ करवाया। बाद में प्रोफ़ेसर इमरान अल-बदावी ने हुज़ूर-ए-अनवर की ख़िदमत में अपनी किताब (The Quran and the Aramaic Gospel Traditions) पेश की। हुज़ूर-ए-अनवर ने मौसूफ़ का शुक्रिया अदा किया।

प्रोफ़ेसर अल-बदावी साहिब ने अपने मौजूदा प्रोजेक्ट के बारे में बताया जो कि समाज और क़ुरआन के संबंध में है और साथ ही एक कॉन्फ़्रेंस का ज़िक्र किया जिसका इंतज़ाम उन्होंने किया था और पाकिस्तान से मुकर्रम मजीबुर्रहमान साहिब एडवोकेट ने इसमें शिरकत की थी। प्रोफ़ेसर मौसूफ़ ने कहा कि जमाअत अहमदिया की पेश की गई क़ुरआन की तशरीह बिल्कुल हक़ाइक़ के अनुसार है और वह जमाअत अहमदिया के इस काम को सराहते हैं और इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने प्रोफ़ेसर अल-बदावी साहिब से दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या उन्होंने हज़रत मसीह-ए-मौऊद रहमहुल्लाह की किताब 'दीबाचा तफ़सीर-उल-क़ुरआन' का मुताला किया है? इस पर मौसूफ़ ने अर्ज़ किया कि नहीं पढ़ी। इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि प्रोफ़ेसर साहिब को यह किताब दी जाए। चुनाँचे प्रोफ़ेसर साहिब को यह किताब मुहैया कर दी गई। इस पर मौसूफ़ ने हुज़ूर-ए-अनवर का शुक्रिया अदा किया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "दीबाचा तफ़सीर-उल-क़ुरआन के पहले हिस्से में मज़ाहिब और मज़ाहिब के दरमियान मुवाज़ना किया गया है। जबकि दूसरे हिस्से में हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हालात-ए-ज़िंदगी बयान किए गए हैं।"

इसके बाद प्रोफ़ेसर कॉन्सिडाइन ने अपनी किताब के लिए तालीमी काम का ज़िक्र किया जो कि डबलिन (आयरलैंड) और बॉस्टन (अमेरिका) में नौजवान मुस्लिम लड़कों के ख़्यालात और आदतों के बारे में है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने प्रोफ़ेसर साहिब से दरयाफ़्त फ़रमाया कि उन्होंने नौजवान मुस्लिम लड़कियों को इसमें शामिल क्यों नहीं किया? इस पर प्रोफ़ेसर साहिब ने कहा कि इसकी वजह लड़कियों के इंटरव्यू के लिए सामाजिक रुकावटें हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "कोई भी रिसर्च मुस्लिम लड़कियों के इंटरव्यू के बिना मुकम्मल नहीं हो सकती।" हुज़ूर-ए-अनवर ने प्रोफ़ेसर साहिब को मशवरा दिया कि वह इस काम के लिए दुनिया के मुख़्तलिफ़ हिस्सों का सफ़र इख़्तियार कर सकते हैं। जैसे कि अफ़्रीका, एशिया या ऑस्ट्रेलिया और वह अहमदी मुस्लिम लड़कियों के इंटरव्यू से इसका आग़ाज़ कर सकते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि "निस्फ़ दीन आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से सीखो।" इसका मतलब है कि एक मुस्लिम ख़ातून को दीनी इल्म है, दीनी इल्म पर उबूर हासिल है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "औरत का इस्लाम में बड़ा करदार है, बड़ा मक़ाम है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जन्नत माँ के क़दमों तले है।"

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "अब आपकी अगली किताब 'वीमेन इन इस्लाम' पर आनी चाहिए।" हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "आप अहमदी मुस्लिम ख़ातून से इंटरव्यू पाकिस्तान में लेंगे तो आपको पता चलेगा।"

प्रोफ़ेसर साहिब ने हुज़ूर-ए-अनवर की रहनुमाई का शुक्रिया अदा किया और कहा कि अब उनको अपनी नई किताब के लिए रहनुमाई मिल गई है।

इस बात का भी ज़िक्र हुआ कि हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने "पीस सिम्पोज़ियम यूके" के मौक़े पर अपने एड्रेस में प्रोफ़ेसर कॉन्सिडाइन का हवाला दिया था। इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि बाद में, मैंने प्रोफ़ेसर साहिब का एक ट्वीट भी पढ़ा था, जिसमें उन्होंने हवाले देने की ख़बर मिलने का ज़िक्र किया था। इस पर प्रोफ़ेसर साहिब ने अर्ज़ किया कि उन्हें बड़ी ख़ुशी है कि इतनी बड़ी हस्ती ने उनका हवाले के तौर पर ज़िक्र किया है।

प्रोफ़ेसर अल-बदावी साहिब से हुज़ूर-ए-अनवर ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि आप का ताल्लुक़ कहाँ से है? इस पर मौसूफ़ ने अर्ज़ किया कि वालिद साहिब का ताल्लुक़ मलेशिया से है और वालिदा साहिबा मिस्र की हैं। इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "इस बैकग्राउंड की वजह से तो आप को अरबी ज़बान का माहिर होना चाहिए।" प्रोफ़ेसर अल-बदावी साहिब ने अर्ज़ किया कि वह बुनियादी तौर पर अरबी पर उबूर रखते हैं बल्कि वह अरबी ज़बान और अदब पढ़ाते रहे हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने प्रोफ़ेसर साहिबान से फ़रमाया कि यूके जलसे पर आएँ, वहाँ दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुमालिक से लोग आते हैं और चालीस हज़ार के लगभग हाज़िरी होती है। इस साल अगस्त 2019 के पहले हफ़्ते में यह जलसा है।

प्रोफ़ेसर कॉन्सिडाइन साहिब ने अर्ज़ किया कि मुलाक़ात के लिए आने से पहले, हम हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ह्यूमैनिटी फर्स्ट यूके के एक प्रोग्राम में जो ख़िताब फ़रमाया था वह सुन रहे थे। इस ख़िताब में हुज़ूर-ए-अनवर ने वह हदीस पेश फ़रमाई थी जिसमें ख़ुदा तआला कहता है कि "मैं भूखा था, मैं प्यासा था और मैं नंगा था, तुमने न मुझे खाना दिया, न पानी दिया और न लिबास मुहैया किया।" प्रोफ़ेसर मौसूफ़ ने अर्ज़ किया कि मेरे बहुत से अहमदी अहबाब दोस्त हैं और मेरे इन से बड़े अच्छे ताल्लुक़ात हैं।

प्रोफ़ेसर अल-बदावी साहिब ने अर्ज़ किया कि वह अपने लेक्चर्स में जिहाद के हवाले से जमाअत अहमदिया का मौक़िफ़ पेश करते हैं।

इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "अगर आप चार्टर ऑफ़ मदीना को अपनाएँ तो पुर-अम्न मुआशरा बना लेंगे। आज इस्लामी दुनिया इस पर बिल्कुल अमल नहीं कर रही लेकिन यह इंसानी हुक़ूक़ का पहला क़ानून था। जिस पर अगर अमल किया जाए तो मुआशरा अम्न का गहवारा बन सकता है। अब पाकिस्तान में इमरान ख़ान साहिब ने कहा था कि मैं इस पर अमल करूँगा लेकिन वह नहीं कर सका।"

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदा के मौक़े पर जो ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया था वह चार्टर ऑफ़ ह्यूमन राइट्स है। अगर इस पर अमल किया जाए तो फिर किसी फ़िर्क़ा, किसी क़ौम की हक़ तलफ़ी नहीं होगी और किसी से ज़्यादती नहीं होगी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "चार्टर ऑफ़ मदीना और आख़िरी ख़ुत्बा हज्जतुल विदा यह सच्चा इस्लाम है और यह अस्ल और हक़ीक़ी इस्लाम है। चार्टर ऑफ़ मदीना में हुकूमती तर्ज़-ओ-तरीक़ बताया गया है जबकि हज्जतुल विदा के ख़ुत्बे में इंसानी अक़्दर का क़ियाम और इंसानी हुक़ूक़ के एहतराम की तालीम दी गई है।"

आख़िर में प्रोफ़ेसर अल-बदावी साहिब ने अर्ज़ किया कि वह हज़ूर-ए-अनवर को राइस यूनिवर्सिटी के बेकर इंस्टीट्यूट में ख़िताब की दावत देना चाहते हैं जो कि मुख़्तलिफ़ रहनुमाओं को मदऊ करने वाला मोतबर तरीन इदारा है। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया "शायद मुस्तक़बिल में किसी वक़्त दौरे के दरमियान शेड्यूल की मुनासिबत से यह मुमकिन हो सके।"

हज़ूर-ए-अनवर ने प्रोफ़ेसर कॉन्सिडाइन साहिब से दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या आप कैथोलिक मज़हब पर अमल कर रहे थे? इस पर मौसूफ़ ने जवाब दिया कि वह अपने मज़हब पर अमल कर रहे हैं। शायद इस वजह से कि वह आयरिश नस्ल के हैं। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि "मज़हब पर अमल करने वाला शख़्स बेहतर है चाहे मज़हब कोई सा हो।"

यह मुलाक़ात पाँच बजकर पचास मिनट तक जारी रही। आख़िर में दोनों प्रोफ़ेसर साहिबान ने हज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई। बाद में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

26 अक्टूबर 2018, शुक्रवार(भाग दो)

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला साढ़े छह बजे मस्जिद के मर्दाना हॉल में तशरीफ़ लाए जहाँ प्रोग्राम के अनुसार वाक़िफ़ात-ए-नौ की क्लास का इनिक़ाद हुआ।

प्रोग्राम का आग़ाज़ तिलावत-ए-क़ुरआन करीम से हुआ जो अज़ीज़ा माहिन वड़ाईच ने की और इसका उर्दू अनुवाद अज़ीज़ा तुबा ख़ुरशीद और बाद में अंग्रेज़ी अनुवाद अज़ीज़ा शाफ़िया बशीर अहमद ने पेश किया।

इसके बाद अज़ीज़ा फ़ायरा मुबीन ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निम्नलिखित हदीस पेश की:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक दुआ मैंने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसी सीखी थी जिसे मैं कभी भी पढ़ना भूलता नहीं। जो यह है:

"अल्लाहुम्मज-अलनी अअ्ज़म शुक्रिक व अक्सर ज़िक्रिक व अत्तबि नसहिक व अहफ़ज़ वसीयतिक"

(मसनद अहमद जिल्द नंबर 2, सफ़ा 311)

"ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा बना दे कि तेरा बहुत ज़्यादा शुक्र कर सकूँ और बहुत ज़्यादा तुझे याद करूँ और तेरी नसीहत की बातों की पैरवी करूँ और तेरे ताकीदी हुक्मों की हिफ़ाज़त (अपने अमल से) कर सकूँ।"

इसके बाद इस हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अंग्रेज़ी ज़बान में अनुवाद अज़ीज़ा माहिदा जावेद सैफ़ी ने पेश किया।

बाद में अज़ीज़ा हम्दा इरफ़ान ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निम्नलिखित इरशाद मल्फ़ूज़ात से पेश किया:

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"और जब नफ़्स जोड़ दिए गए तो यह मेरे ही लिए है... फिर यह भी जमा है कि ख़ुदा तआला ने तबलीग़ के सारे सामान जमा कर दिए हैं। चुनाँचे मत्बा के सामान, काग़ज़ की कसरत, डाकख़ानों, तार और रेल और दुख़ानी जहाज़ों के ज़रिए कुल दुनिया एक शहर का हुक्म रखती है और फिर नित नई इजादें इस जमा को और भी बढ़ा रही हैं क्योंकि असबाब-ए-तबलीग़ जमा हो रहे हैं। अब फ़ोनोग्राफ़ से भी तबलीग़ का काम ले सकते हैं और इससे बहुत अजीब काम निकलता है, अख़बारों और रिसालों का इजरा। ग़रज़ इस क़दर सामान-ए-तबलीग़ के जमा हुए हैं कि इसकी नज़ीर किसी पहले ज़माने में हम को नहीं मिलती।"

(अल-हकम जिल्द 6, नंबर 43 तिथि 30 नवंबर 1902)

इसके बाद अज़ीज़ा दानिया इफ़्फ़त अहमद ने इस इक़्तिबास का अंग्रेज़ी ज़बान में अनुवाद पेश किया।

बाद में अज़ीज़ा मलीहा जलाल लक़मान ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मंज़ूम कलाम:

"दीन की नुसरत के लिए एक आसमां पर शोर है
अब गया वक़्त-ए-ख़िज़ाँ आए हैं फल लाने के दिन"

में से मुंतख़िब अशआर पेश किए।

इसके बाद अज़ीज़ा हाला तारिक़ भट्टी ने हज़ूर-ए-अनवर को ख़ुश आमदीद कहा। बाद में अज़ीज़ा लबीबा सईद, अज़ीज़ा इमामा लारिब और अज़ीज़ा हुमा मुनिर ने "एमटीए - हमारा ख़िलाफ़त से तअल्लुक़ का ज़रिया" के उन्वान पर एक प्रेज़ेंटेशन दी।

इसके बाद अज़ीज़ा माहम अहमद ने उर्दू ज़बान में "मैं तेरी तबलीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुँचाऊँगा" के उन्वान पर तक़रीर की।

बाद में अज़ीज़ा आलिया बिलाल राणा, अज़ीज़ा अम्बर महमूद, अज़ीज़ा अस्मा यासीन और अज़ीज़ा फ़ातिमा ज़फ़र टनोली ने "टेक्सास (TEXAS) शहर की सैर" के उन्वान से एक प्रेज़ेंटेशन दी।

बाद में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सवाल करने की इजाज़त अता फ़रमाई।

एक वाक़िफ़ा-ए-नौ ने पूछा कि मेरे वालिद चाहते हैं कि मैं मेडिकल पढ़ूँ और इसी लिए बायोमेडिकल पढ़ रही हूँ जबकि मुझे वकील बनने का शौक़ है तो इस सूरत में क्या करूँ?

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "मेडिकल पढ़ने का शौक़ पैदा करो क्योंकि हमें डॉक्टरों की ज़रूरत है वकीलों की नहीं। आपके अब्बा जो कहते हैं ठीक कहते हैं।"

उसी वाक़िफ़ा-ए-नौ ने कहा कि मेरा दूसरा सवाल यह है कि बेहतरीन इक़्तिसादी निज़ाम कौन सा है जैसे कि अमेरिका में कैपिटलिज़्म है या सोशलिज़्म?

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

"बेहतरीन निज़ाम इस्लामी मालियाती निज़ाम है। इसके लिए हज़रत मस्लिह-ए-मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की किताब 'इस्लाम का इक़्तिसादी निज़ाम' पढ़ें जो आप को तफ़सील मुहैया कर देगी। इसे दो लफ़्ज़ों में या चार मिनटों में बयान नहीं किया जा सकता। इस्लामी निज़ाम न ही सोशलिज़्म है और न ही कैपिटलिज़्म बल्कि इसका बुनियादी नुक़्ता यह है कि हर एक की ज़रूरत पूरी करनी है। इसके लिए ज़कात है और दूसरे टैक्स हैं बाक़ी तफ़सील किताब से पढ़ें।"

एक वाक़िफ़ा-ए-नौ बची ने बताया कि वह रबवाह से पोर्टलैंड जमाअत में आई है और हज़ूर-ए-अनवर की तहरीक पर बैतुल फ़ुतूह के लिए कुछ ज्वैलरी देना चाहती है। बची ने कहा कि उसकी ख़्वाहिश है कि वह हज़ूर-ए-अनवर की ख़िदमत में पेश करे। हज़ूर-ए-अनवर ने इस्तिफ़सार फ़रमाया कि 'क्या नाम और पता लिख दिया है? ताकि उसकी रसीद भिजवाई जा सके।' जिस पर बची ने कहा 'जी लिख दिया है' तो इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया 'ठीक है।'

एक वाक़िफ़ा-ए-नौ बची ने सवाल किया कि हज़ूर-ए-अनवर ने वक़्फ़-ए-नौ बच्चों के लिए तहरीक फ़रमाई है कि वह उर्दू सीखें लेकिन यहाँ सारे इजलास और इज्तिमाअत अंग्रेज़ी में होते हैं।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: "इंग्लैंड में भी ऐसे ही था, लेकिन अब हमने शुरू किया है कि सत्तर फ़ीसद कार्रवाई अंग्रेज़ी और तीस फ़ीसद उर्दू में हो। पहले यह इसलिए था कि अक्सरियत अंग्रेज़ी समझती थी और उर्दू बहुत कम को समझ आती थी लेकिन यहाँ अब इमिग्रेंट्स की एक बड़ी तादाद आई है इसलिए यहाँ भी ऐसा किया जा सकता है कि जब तक वह सही तरह से अंग्रेज़ी नहीं सीख लेते उन्हें यह सुविधा मिलनी चाहिए। बहरहाल एक वाक़िफ़ा-ए-नौ को उर्दू आनी चाहिए।"

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

"मा-शा-अल्लाह जैसे तुम सब वाक़िफ़ात-ए-नौ मेरे सामने स्कार्फ़ ओढ़ कर बैठी हो, तुम्हें दूसरी लड़कियों के लिए क़ाबिल-ए-तक़्लीद नमूना होना चाहिए और इसी तरह तुम्हारे अख़्लाक़, नमाज़ें, गुफ़्तगू और लिबास भी। आपके लिबास में हया होनी चाहिए और स्कार्फ़ ओढ़े हुए होना चाहिए। सिर्फ़ बातें करने, नारे लगाने या तराने पढ़ने से कुछ नहीं होता बल्कि वाक़िफ़ात-ए-नौ को अमली नमूना दिखाना पड़ेगा।"

एक वाक़िफ़ा-ए-नौ बची ने सवाल किया कि अगर कोई शख़्स बुरे काम करता हो जैसे कि बैंक डकैती लेकिन फिर उसमें नेक तब्दीली हो तो क्या वह जन्नत में जा सकता है?

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

"आख़िरी फ़ैसला तो अल्लाह तआला का है। अल्लाह तआला को पता है कि किसने कहाँ जाना है? लेकिन अल्लाह तआला कहता है कि अगर कोई अपने आप को बदल ले और गुनाहों की तौबा करे और अल्लाह तआला की बातें माने तो अल्लाह तआला उसे जन्नत में ले जाएगा।"

एक वाक़िफ़ा-ए-नौ बची ने सवाल किया कि आम तौर पर मर्दों और औरतों के दरमियान पर्दा होता है लेकिन जब हज पर जाते हैं तो वहाँ औरतों और मर्दों के दरमियान पर्दा न होने की क्या हिकमत है?

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

"हज एक ऐसी इबादत है जो कि पूरे इन्हिमाक़ और तवज्जोह से होती है। कम से कम अल्लाह तआला तो यही चाहता है। मर्द औरत की तरफ़ न देखे और औरत मर्द की तरफ़ न देखे। इसलिए यह एक वजह हो सकती है लेकिन आजकल जो हज के लिए जाते हैं उनका तो कोई ईमान ही नहीं है उनके तो पता नहीं हज भी क़बूल होते हैं कि नहीं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अथ-थानी रज़ियल्लाहु अन्हु जब 1912-13 में हज के लिए गए तो फ़रमाते हैं कि इंडिया से एक चौबीस-पच्चीस साल का लड़का भी हज पर गया हुआ था जो कि हज के दरमियान बजाए दुआएँ करने के फ़िल्मी गाने गा रहा था तो ऐसे लोग भी होते हैं। हज तो मुकम्मल इन्हिमाक़ और तवज्जोह चाहता है। यही एक वजह बयान हो सकती है। बाक़ी जो हमें बताया गया हमने तो इस तरह ही करना है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में बग़ैर किसी चादर के बग़ैर किसी पर्दे के और बग़ैर किसी दीवार के मर्द आगे नमाज़ें पढ़ा करते थे और

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 31 July 2025 Issue No. 31

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

औरतें पीछे नमाज़ें पढ़ती थीं, वह भी ज़माना था। यह पर्दा तो तुम्हारी सुविधा के लिए है। हज में औरतों के लिए मर्दों की तरह इहराम नहीं होता वह अपना लिबास पहन कर भी हज कर सकती हैं।"

एक वाक़िफ़ा-ए-नौ बची ने सवाल किया कि अगर आपका ख़ावंद आपको बेपर्दगी के लिए कहे तो फिर क्या करना चाहिए?

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

"तुम यह फ़ैसला करो कि अल्लाह की बात माननी है या ख़ावंद की। जैसे मैंने अभी कहा है कि आपका लिबास हयादार होना चाहिए। हया ईमान का हिस्सा है। हया ही अस्ल चीज़ है और पर्दे का हुक्म अल्लाह तआला का है। वह तो हमने बात माननी है। पाकिस्तान में क़ानून कहता है कि तुमने अपने आप को मुसलमान नहीं कहना और सलाम नहीं कहना तो क्या अहमदी यह बात मानते हैं? बाक़ी क़ानून की सब बातें मान लेते हैं लेकिन क़ानून की यह बात नहीं मानते क्योंकि अल्लाह तआला के हुक्म के मुख़ालिफ़ है। तो आपका यह उसूल होना चाहिए कि जो भी बात अल्लाह तआला के हुक्म से टकराए चाहे वह वालिदैन कहें, ख़ावंद कहे या कोई भी कहे वह नहीं माननी।"

वाक़िफ़ात-ए-नौ की यह क्लास सात बज कर दस मिनट तक जारी रही। आख़िर में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस क्लास में शामिल होने वाली वाक़िफ़ात-ए-नौ बचियों को जाए नमाज़ अता फ़रमाई।

बाद में प्रोग्राम के अनुसार साढ़े सात बजे वाक़िफ़ीन-ए-नौ बच्चों की क्लास शुरू हुई।

प्रोग्राम का आग़ाज़ तिलावत-ए-कुरआन करीम से हुआ जो अज़ीज़ जलीस अहमद ने की। इसका उर्दू अनुवाद अज़ीज़ बिलाल अहमद सिद्दीक़ी और अंग्रेज़ी अनुवाद अज़ीज़ ताहिर अहमद भट्टी ने पेश किया।

इसके बाद अज़ीज़ सैयद नवास अहमद ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निम्नलिखित हदीस पेश की:

"इन्नल मोमिन फी ज़मानिल काइम व हुवा बिल मशरिक युसरी अख़ाहुल्लज़ी फिल मग़रिब व कज़ाल्लज़ी फिल मग़रिब यरा अख़ाहुल्लज़ी फिल मशरिक"

(बहारुल अनवार अल-जामिआ लिदुरर अख़बारिल अइम्मतिल अज़हार लिशैख़ मुहम्मद बाक़िर अल-मजलिसी जिल्द नंबर 52, बाब फी सीरतिही व अख़लाक़िही व अस्हाबिही सफ़ा 391 दार इह्याउत तुरासिल अरबी बैरुत लुबनान)

"इमाम महदी के ज़माने में मशरिक वाला मोमिन अपने भाई को जो मग़रिब में होगा देख लिया करेगा और इसी तरह जो मग़रिब में होगा वह अपने भाई को जो मशरिक में होगा देख लिया करेगा।"

अज़ीज़ उसामा सैफ़ी ने इस हदीस नबवी का अंग्रेज़ी ज़बान में अनुवाद पेश किया।

बाद में अज़ीज़ राशिद अहमद वड़ाईच ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निम्नलिखित इक़्तिबास पढ़ कर सुनाया:

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तजल्लियात-ए-इलाहिया में तहरीर फ़रमाते हैं:

**"ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार ख़बर दी है कि वह मुझे बहुत अज़मत देगा और मेरी मुहब्बत दिलों में बिठाएगा और मेरे सिलसिले को तमाम ज़मीन में फैलाएगा और सब फिरक़ों पर मेरे फिरके को ग़ालिब करेगा और मेरे फिरके के लोग इस क़दर इल्म और मारिफ़त में कमाल हासिल करेंगे कि अपनी सचाई के नूर और अपने दलीलों और निशानों के रू से सब का मुँह बंद कर देंगे। और हर एक क़ौम इस चश्मे से पानी पिएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फूलेगा यहाँ तक कि ज़मीन पर मुहीत हो जाएगा। बहुत सी रोकें पैदा होंगी और इब्तिला आएँगे मगर ख़ुदा सब को दरमियान से उठा देगा और अपने वादे को पूरा करेगा। और ख़ुदा ने मुझे मुख़ातिब कर के फ़रमाया कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूँगा यहाँ तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढेंगे।

सो ऐ सुनने वालो! इन बातों को याद रखो। और इन पेशख़बरियों को अपने सन्दूक़ों में महफ़ूज़ रख लो कि यह ख़ुदा का कलाम है जो एक दिन पूरा होगा।"**

(तजल्लियात-ए-इलाहिया, रूहानी ख़ज़ाइन कम्प्यूटराइज़्ड एडिशन जिल्द 20 सफ़ा 409,410)

इसके बाद अज़ीज़ सौबान इक़बाल ने इस इक़्तिबास का अंग्रेज़ी ज़बान में अनुवाद पेश किया।

बाद में अज़ीज़ सैयद औवैस अहमद, अज़ीज़ यासिर ख़ान और अज़ीज़ आशिर अहमद भट्टी ने "MTA" के उन्वान से एक तराना पेश किया जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद इस्माईल मुबारक अहमद ने पेश किया।

इसके बाद अज़ीज़ ज़रयाब फ़ारूक़ ने अंग्रेज़ी ज़बान में "MTA, हमारा ख़िलाफ़त से तअल्लुक़ का ज़रिया" के उन्वान पर तक़रीर की।

बाद में अज़ीज़ लबीद अहमद ने "MTA की अहमियत व बरकात" के उन्वान पर उर्दू ज़बान में तक़रीर की।

इसके बाद अज़ीज़ अर्सलान वलीद अहमद, अज़ीज़ तलाल मंसूर अहमद ने "MTA हमारा ख़िलाफ़त से तअल्लुक़ का ज़रिया" के उन्वान पर एक प्रेज़ेंटेशन दी।

बाद में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सवाल करने की इजाज़त अता फ़रमाई।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि 'आप में से कितने हैं जो उर्दू समझ लेते हैं? जिनको थोड़ी बहुत उर्दू आती है या समझ लेते हैं वह बारी-बारी हाथ खड़ा करें।'

इसके बाद एक वाक़िफ़-ए-नौ बचे ने सवाल किया कि मैं हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अथ-थानी रज़ियल्लाहु अन्हु की किताब 'बरकात-ए-ख़िलाफ़त' पढ़ रहा था जिसमें ख़लीफ़तुल मसीह अथ-थानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया है कि हर क़ौम में एक वक़्त आता है जब वह सियासत में जाते हैं। लेकिन इस वक़्त हमें सियासतदानों की ज़रूरत नहीं है लेकिन शायद मुस्तक़बिल में हो तो उस वक़्त ख़लीफ़ा वक़्त बताएँगे। क्या अब वह वक़्त आ गया है कि अहमदी सियासतदान बनें?

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

'हाँ बन सकते हैं लेकिन वाक़िफ़ीन-ए-नौ नहीं बन सकते। वाक़िफ़ीन-ए-नौ के लिए मैंने एक प्रोग्राम दिया है कि जमाअत की क्या ज़रूरियात हैं। हमें इस वक़्त डॉक्टरों और असातिज़ा की ज़रूरत है और कुछ इंजीनियर्स और अकाउंटेंट्स की भी ज़रूरत है लेकिन ज़्यादा तर डॉक्टरों और असातिज़ा की ज़रूरत है। अगर किसी में सियासतदान बनने के लिए या इसी तरह किसी और पेशे के लिए कोई ख़ुदादाद सलाहियत है तो वह इनफ़िरादी तौर पर राब्ता कर सकता है। वैसे तो अहमदी सियासतदान मौजूद हैं। घाना में अहमदी सियासतदान मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट हैं। इसी तरह पाकिस्तान में अहमदिया मुख़ालिफ़ क़ानून की मंज़ूरी से पहले 1974 में भुट्टो की पार्लियामेंट में तीन-चार अहमदी रुक्न थे, एक सीनेट के मेम्बर थे और दो अहमदी पंजाब असेंबली के मेम्बर थे। यहाँ अमेरिका में जो अहमदी सियासत में दिलचस्पी रखते हैं वह सियासत में जा सकते हैं लेकिन पार्टी के इंतिख़ाब में एहतियात से काम लेना होगा।'

शेष पृष्ठ 7 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad